

36वाँ अंक

पंचवटी



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - 1,
महाराष्ट्र, मुंबई



फ्लोरा फाउंटेन

इस पत्रिका का मुखचित्र फ्लोरा फाउंटेन हुतात्मा चौक पर स्थित है जो ऐतिहासिक दादाभाई नौरोजी रोड के दक्षिण छोर पर स्थित एक सजावटी रूप से गढ़ी हुई वास्तुकला विरासत स्मारक है, जो दक्षिण मुंबई, भारत के केंद्र में फोर्ट बिजनेस में स्थित है। फ्लोरा फाउंटेन 1864 में बनाया गया था जो रोमन देवी फ्लोरा को दर्शाता है। इसे कुल 47000 रुपये या 9000 पाउंड स्टर्लिंग की लागत से बनाया गया था।

ऐतिहासिक रूप से फ्लोरा फाउंटेन का गोलाकार आकार वाहनों के आवागमन के लिए एक गोल चक्कर की तरह काम करता था। यह किले के विरासत परिसर में एक प्रमुख स्थल है, जो सेंट्रल टेलीग्राफ ऑफिस, ओरिएंटल बिल्डिंग, इस्माइल बिल्डिंग, युसुफ बिल्डिंग और मुल्ला हाउस जैसी कई ऐतिहासिक संरचनाओं से घिरा हुआ है। फ्लोरा फाउंटेन ठीक उसी स्थान पर बनाया गया था, जहां मुंबई किले के साथ-साथ चर्चगेट (सेंट थॉमस कैथेड्रल, मुंबई के नाम पर) खड़ा था। इसका निर्माण पश्चिमी भारत की कृषि-बागवानी सोसायटी द्वारा कर्सेटजी फरदूनजी पारेख द्वारा दिए गए 20000 रुपये के दान से किया गया था। रिचर्ड नॉर्मन शॉ द्वारा डिजाइन किया गया, इसे जेम्स फोर्सिथ द्वारा आयातित पार्टलैंड पत्थर में तराशा गया था। तेल के रंग के एक सफेद कोट ने कुछ हद तक संरचना की प्राचीनता को खराब कर दिया है। फव्वारे का नाम मूल रूप से उस समय बॉम्बे के गवर्नर सर बार्टले फ्रेरे के नाम पर रखा जाना था, जिनकी प्रगतिशील नीति के परिणामस्वरूप मुंबई की कई शानदार सार्वजनिक इमारतें बनी थीं। हालांकि, फव्वारे के अनावरण से पहले नाम बदलकर फ्लोरा फाउंटेन कर दिया गया।

फ्लोरा फाउंटेन में प्रतीकात्मक आकृतियाँ

- ★ फ्लोरो फाउंटेन का निर्माण सर बार्टल फ्रेरे के सम्मान में किया गया था, जिन्होंने नवनिर्मित पूर्व-पश्चिम अक्ष (टाउन हॉल से चर्चगेट स्टेशन तक) और उत्तर-दक्षिण अक्ष (सीएसएमटी से गेटवे ऑफ इंडिया तक) के साथ बॉम्बे के पुर्ननिर्माण की योजना बनाई थी।
- ★ फ्लोरो फाउंटेन के किनारों और कोनों पर कुल 64 अंकुर हैं। आधार के चारों ओर एक बेसिन पानी इकट्ठा करता है, और एक गोलाकार पूल अतिप्रवाह को एकत्रित करता है, जिसे फिर एक जटिल आंतरिक पाइपलाइन प्रणाली के माध्यम से पुनचक्रित किया जाता है। प्रचुर मात्रा में पानी और स्त्री पालनकर्ता की देखभाल, जीवन के खिलने की कथ्य का प्रतिनिधित्व करती है।
- ★ इस फव्वारे का नाम फ्लोरो के नाम पर रखा गया है, जो फूलों और वसंत ऋतु मकी रोमन देवी हैं। देवी की मूर्ति का निर्माण सबसे ऊपर हुआ है।
- ★ फ्लोरो फाउंटेन में चार मौसमों: वसंत, ग्रीष्म, शरद और सर्दी ऋतु का प्रतिनिधित्व करनेवाली रूपक आकृतियाँ की आदमकद मूर्तियाँ हैं। ये आकृतियाँ फाउंटेन के चारों कोनों पर रखे सिंहासनो पर बैठी हैं। उन्हें स्टोला पहने हुए दिखाया गया है, जो रोमन महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला पारंपारिक परिधान है, जो रोमन पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले टोगा के अनुरूप है।



पंचवटी परिवार

संरक्षक

श्री संजय कुमार झा
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्रीमती आस्था लूथरा
महालेखाकार

अध्यक्ष

श्रीमती रचना जे. सिंह
वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन

परामर्शदाता समिति

श्री जी. एस. सूर्यवंशी
वरिष्ठ उप महालेखाकार / पेंशन

श्री अतुल बंसल
उप-महालेखाकार / लेखा

परामर्श समिति सदस्य

श्री मुश्ताक मुखरी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

डॉ सुमित एस
हिन्दी अधिकारी

श्रीमती निशा कुमारी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुश्री सुप्रिया साहू
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सुश्री स्वाति वर्मा
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

मुद्रक

हेरंब आर्ट, मुंबई

तत्वाधिकार

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)-1

महाराष्ट्र, मुंबई - 400 020.

संदेश

हम सबके लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि विभिन्न रचनाओं से सुसज्जित कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'पंचवटी' के 36 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है और हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा समर्पण दर्शाता है।

कार्यालयीन कार्य में व्यस्तता के बावजूद सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के प्रति जिस निष्ठा का परिचय दिया है, वह अपने आप में प्रशंसनीय है। मैं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके विचारों से पाठकगण भी लाभान्वित होंगे।

इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन की कामना करते हुए राजभाषा कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को मैं अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

संजय कुमार झा

संजय कुमार झा
प्रधान महालेखाकार



संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'पंचवटी' के 36वें अंक का प्रकाशन होना अत्यंत हर्ष का विषय है। हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित करने में राजभाषा हिंदी पत्रिका ने सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा हिन्दी के प्रति रुझान को दर्शाता है और यह बहुत ही सकारात्मक पहल है कि राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित कर कार्मिकगण अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को उनके सराहनीय कार्य करने हेतु बधाई देना चाहती हूँ।

आशा करती हूँ कि 'पंचवटी' पत्रिका ऐसे ही निरंतर उच्च गुणवत्ता लेकर प्रकाशित होती रहे। इस पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देते हुए पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आस्था लूथरा
आस्था लूथरा
महालेखाकार



संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि कार्यालयीन पत्रिका 'पंचवटी' के 36वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका साहित्यिक प्रतिभा के साथ-साथ संवैधानिक दायित्वों को दर्शाती है। सांस्कृतिक एवं साहित्यिक उपलब्धियां किसी समाज के विकास और उन्नति का मापदंड होता है। एक समाज की साहित्य, कला और समाज की विचारधारा उसकी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। विभिन्न रचनाओं से परिपूर्ण यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों की रचना प्रतिभा का दर्पण है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इस पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति होती रहें।

रचना जयपाल सिंह
वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन

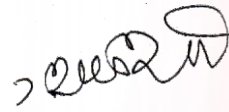


संदेश

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालयीन हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'पंचवटी' के 36वें अंक का प्रकाशन किए जाने पर मुझे अत्यधिक गर्व एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत सरकार को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह भारत में राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार एवं विकास सुनिश्चित करें। भारत सरकार के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

इस पत्रिका ने विगत कई वर्षों से कर्मचारियों की रचनात्मकता को एक नया आयाम दिया है एवं क्रमशः अपना स्तर बढ़ाने में सफल रही है।

मैं हृदय से संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को अपनी हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ, जिनके प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन निरंतर जारी है।



जी. एस. सूर्यवंशी
वरिष्ठ उप महालेखाकार / पेंशन



संदेश

इस कार्यालय की गृहपत्रिका 'पंचवटी' के 36वें अंक का प्रकाशन होने से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका अधिकारियों / कर्मचारियों को उनके विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए सशक्त मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका की रचनाओं में विभिन्न रसों का समावेश है। अधिकारियों / कर्मचारियों ने अपने विचारों को जिस उत्साह और लगन से व्यक्त किया है, वह सराहनीय एवं हृदयस्पर्शी है। इन रचनाओं में रचनाकारों का हिन्दी के प्रति प्रेम व निष्ठा का भाव स्पष्ट रूप से झलक रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी एवं कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। अधिकांश कार्मिक राजभाषा हिन्दी के प्रति आकर्षित होते हैं और इसका सीधा लाभ राजभाषा कार्यान्वयन को मिलता है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई।

अतुल बंसल

अतुल बंसल

उप महालेखाकार / लेखा



संपादकीय

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका पंचवटी का 36वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान है और भाषा के विकास में भी योगदान करती है। ये पत्रिकाएँ भाषा के स्वरूप और उसके अनुशासन में सुधार के लिए भी महत्वपूर्ण मंच प्रदान करती है, इसके साथ ही कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों के रचनात्मकता को उजागर करती है। राजभाषा पत्रिका के द्वारा कर्मिकगणों को अपनी स्वरचित कविता, कहानी, चित्रकारी, लेख आदि देकर अपनी विचार, भावना, ज्ञान को अद्वितीय रूप से व्यक्त करने का अवसर मिलता है। कार्यालयी पत्रिका कर्मिकगणों के सोचने की प्रक्रिया को संवादशील बनाती है। इसके अलावा पत्रिका सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों पर विचार करने के लिए एक माध्यम के रूप में काम करती है।

आशा है कि 'पंचवटी' पत्रिका का यह अंक अपनी सभी पाठकों के अपेक्षाओं पर खड़ी उतरेगी तथा साथ ही पाठकगणों के विचार और सुझाव का स्वागत है। पत्रिका में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही पत्रिका को अपने पाठकों को समर्पित करते हुये पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की कामना है।

संपादक मंडल



पंचवटी के 36वें अंक के लिए प्राप्त रचनाओं की सूची

क्रम सं.	शीर्षक	विवरण	अधिकारी/कर्मचारी के नाम / रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	महान, सार्थक और आनंदीत जीवन का रहस्य	लेख	श्री रामकुमार नप्ते	9
2	स्मृति के झरोखों से	कविता	श्री सुशील कुमार यादव	11
3	दिल भूखा है ...	कविता	श्रीमती पूर्णिमा सु. कुकडे	11
4	मुझे गर्व है	लेख	श्रीमती एम.एच.कुंदनानी	12
5	बेटियाँ	कविता	श्री मृत्युंजय कुमार	12
6	अविस्मरणीय मंगलमय यात्रा	लेख	श्रीमती निशा कुमारी	13
7	मेहनत का फल	लेख	श्रीमती हेमांगी ग. बारसकर	15
8	छोटा सा गाँव मेरा	कविता	श्री नरेंद्र कुमार	17
9	माँ	कविता	श्रीमती पुष्पा एम. निमजे	17
10	गाँव और शहर	कविता	श्री योगेश यादव	18
11	सपने	कविता	श्री पिन्दू कुमार	18
12	सौंदर्यता, मन और हम	लेख	श्री बाबासाहेब वि. जगताप	19
13	कागज़ की नाव	कविता	श्री गौरव शर्मा	20
14	मैं मुंबईकर हूँ	लेख	श्रीमती रेवती गणेश	21
15	कहाँ गए वो दिन	कविता	श्री रितेश कुमार वर्मा	22
16	मोबाइल है मेरी जान	लेख	श्री विनय भा. राणे	23
17	लक्ष्मणभार्या	लेख	श्रीमती अनुपमा पंडीत	24
18	महिलाएँ एवं वित्तीय प्रबंधन	लेख	श्रीमती तनुजा शर्मा	25
19	युवाओं में बढ़ती असंतोष की भावना	लेख	श्री सत्येंद्र प्रताप सिंह	26
20	महिला श्रमबल भागीदारी	लेख	श्री हरिश कुमार बघेल	27
21	द्वंद्व	लेख	श्री जय टिंडवानी	28
22	इंटरनेट - आज की आवश्यकता	लेख	श्री रंजीत वर्मा	30
23	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा चैट जी.पी.टी.	लेख	श्री लोकनाथ दत्ता	31
24	चंद्रयान - 3	लेख	श्री बाळा ना. परब	33
25	यातायत के नियमों का पालन या चालान का डर ?	लेख	श्री अजित सिंह चौधरी	34
26	विश्व का पहला गणतंत्र "वैशाली "	लेख	श्री विकास कुमार	35
27	मासूम की अमीरी	लेख	श्री अविनाश मान्दालिया	36
28	भारतीय शिक्षा प्रणाली	लेख	श्री सचिन शं. उमक	38
29	संस्कृतियाँ से समृद्ध देश - भारत	लेख	श्री प्रदिप्ताकुमार पट्टनायक	40
30	रेन वॉटर हार्वेस्टिंग क्या है ?	लेख	श्रीमती गीता कोटीयन	40
31	महाकवि विद्यापति	लेख	श्री भारत भूषण कुमार	41
32	चित्र	...	सुश्री संयुक्ता प्रकाश राणे	43
33	चित्र	...	कुमार सार्थक प्रकाश राणे	43
34	विडंबना	लेख	श्री संजय कुमार	44
35	चित्र	...	सुश्री फैज़ा मुश्ताक मुखरी	45
36	अन्य गतविधियाँ	...		46
37	हिंदी पखवाड़ा	...		48

महान, सार्थक और आनंदीत जीवन का रहस्य

दृष्टीकोण

- हम अपने अनुभव की व्याख्या कैसे करते हैं यह निर्धारित करता है कि हमारा अनुभव क्या होगा ।
- यदि हमारे पास उचित दृष्टीकोण है, तो हम बिना किसी भ्रम के किसी भी समस्या की बारीकियों से हल कर सकते हैं । वास्तविक सार सही दृष्टीकोण रखना है ।

विकास का रहस्य “दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों की उपस्थिति में एक पक्षी बिल्कुल महत्वहीन लगता है । यह पक्षी वह नहीं कर सकता जो हम लोग कर सकते हैं ।

मेरे मन में एक विचार आया जिससे मेरा हृदय उस पक्षी से भी ऊंचा उड़ गया । मैंने सोचा कि इतना छोटा पक्षी वह नहीं कर सकता जो ये महान मनुष्य कर सकते हैं, मनुष्य वह नहीं कर सकता जो छोटा सा पक्षी कर सकता है । हम लोगों में से एक भी स्वतंत्र रूप से आकाश में उड़ नहीं सकते ।

हर किसी के पास ईश्वर प्रदत्त अद्वितीय उपहार और क्षमताएं हैं जिनका उपयोग अपने तरीके से दुनिया में कुछ विशेष योगदान देने के लिए किया जा सकता है । यदि आप किसी मछली को उसकी पेड़ पर चढ़ने की क्षमता से आंकेंगे, तो वह जीवन भर खुद को बेकार समझेगी । अपना ध्यान उस पर केंद्रित करें जो आप कर सकते हैं, न कि उस पर जो आप नहीं कर सकते हैं । यही विकास का रहस्य है ।

कृतज्ञता

- एक कृतज्ञ हृदय एक विनम्र हृदय होता है ।
- एक कृतज्ञ हृदय वह नहीं है जो इस बात को लेकर बहुत चयनात्मक हो कि किस चीज के लिए कृतज्ञ होना चाहिए ।
- कृतज्ञ हृदय वह हृदय है जहां भक्ति का बीज उगेगा ।
- हमेशा हर व्यक्ति की अच्छाइयों को स्वीकार करें ।
- कोई भी वास्तविक सभ्यता सम्मान और कृतज्ञता के सिद्धांतों पर आधारित होती है । उस आदर और कृतज्ञता के आधार पर ही नैतिकता, दान और करुणा है ।
- संतोष केवल उन लोगों के दिलों में रहता है जो कृतज्ञ हैं ।
- कृतज्ञता का अर्थ केवल धन्यवाद कहना नहीं है । वास्तविक कृतज्ञता का अर्थ है पारस्परिकता । यदि आप वास्तव में किसी के प्रति कृतज्ञ हैं, तो आप प्रतिदान भी देंगे, भले ही इसके लिए बड़ा त्याग क्यों न करना पड़े ।

- कृतज्ञता एक दैवीय गुण है जो इतना महत्वपूर्ण है कि इसके बिना कोई अन्य दैवीय गुण मौजूद नहीं हो सकता है ।
- कृतज्ञता हमारे हृदय को कोमल बनाती है । कृतज्ञता भक्ति के बीज को विकसित करने में सक्षम बनाती है ।
- छोटे परिवार ईश्वर को अपना पिता मानकर एक बड़ा परिवार बन सकता है ।
- आत्मा का आनंद समस्त सृष्टि के प्रिय प्रभु की महिमागान में है ।
- जीवन की पूर्णता इस सृष्टि के हर एक पहलू में ईश्वर के प्रेम को समझने और उसकी सराहना करने की क्षमता में है ।
- जब हम किसी चीज की अपेक्षा करते हैं तो वह दुख का बीज होता है: कृतज्ञ जीवन शांतिपूर्ण जीवन है ।
- जब हम “मैं” और “मेरा” के बारे में सोचना बंद कर देते हैं और इसके बजाय “हमारे” के बारे में सोचते हैं, तो हमारी जड़ें प्यार, विश्वास और अनुग्रह की मिट्टी में मजबूत होंगी, जो हमें याद दिलाती हैं कि देने में हमें प्राप्त होतो है ।
- भक्ति में हम, निःस्वार्थ सेवा के माध्यम से कृतज्ञता व्यक्त करते हैं । हम ‘धन्यवाद’ कहते हैं, और उस ‘धन्यवाद’ के अनुसार जीते हैं ।
- एक कुत्ता अपने मालिक को उसी तरह से पहचान लेगा जैसे वह कपड़े पहनता है । मालिक भले ही लबादा, सूट और टाई पहने, या नग्न खड़ा हो, लेकिन कुत्ता हमेशा अपने मालिक को पहचान लेगा ।

यदि हम अपने प्रिय ईश्वर को तब नहीं पहचान पाते जब वह अलग अलग धर्म के भिन्न वेश धारण कर आते हैं, तो हम उस कुत्ते से भी नीचले स्तर पर होते हैं ।

आनंद

- निःस्वार्थ जीवन, भक्तिपूर्ण जीवन, करुणा का जीवन - यही वास्तविक खुशी है ।
- खुशी इसमें नहीं है कि हम क्या करते हैं, बल्कि उस कृतज्ञता और प्रेम में है जिसमें हम यह करते हैं ।
- यदि हम अपनी खुशी का आनंद लेते हैं, तो हमें अपनी परेशानी भी झेलनी पड़ेगी । यदि हम अपना सुख सहन कर लेंगे तो हम कष्ट भी सहन कर सकेंगे ।

- यदि हम अपनी महानता में आनंद लेते हैं, तो यह समय की लहरों से धुल जाएगा। यदि हम ईश्वर की महानता में आनंद लेते हैं, तो हम आध्यात्मिक आनंद के सागर में गोते लगाते रह जायेंगे।
- असली खुशी सेवा में है। संचय से मन तृप्त नहीं होता।
- सुख का दूसरा पहलू दुःख है।
- सेवा करने में जो खुशी है, वह खुशी है, जिसमें भौतिक प्रकृति बाधा नहीं डाल सकती क्योंकि हम हमेशा किसी न किसी तरह से सेवा कर सकते हैं।
- इस दुनिया में इतनी खुशियाँ हैं कि आप अपने दुखों से जुड़े रह सकें। जब तक कोई अपने दिल से खुश नहीं होता, वह चाहे कुछ भी हासिल कर ले, खुश नहीं हो सकता।
- जब हमें दूसरों का सम्मान करने में खुशी मिलती है तो कोई भी चीज हमारी खुशी में बाधा नहीं डाल सकती।
- आध्यात्मिक जीवन आनंददायक है, मनोरंजक है, अद्भुत है। यह सिर्फ एक तपस्या नहीं है, आध्यात्मिक जीवन सबसे बड़ा उत्साह, सबसे गतिशील, आनंददायक, आनंदमय जीवन शैली है जब हमारे चारों ओर सही वातावरण होता है।
- जब भगवान देखते हैं कि हमारी असली खुशी अन्य भक्तों को, भगवान को प्रसन्न करने के प्रयासों में मदद करने में है, तो हम उनके प्रिय बन जाते हैं।
- यदि हम केवल भगवान के नाम, हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करें, तो हमें खुशी का वह बड़ा खजाना मिल जाएगा, और हम उस खुशी के साथ साझा करने में सक्षम होंगे।
- कभी नदी बहुत तेज़ बहती है तो कभी बहुत धीमे, लेकिन इससे समुद्र को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वह अपने पानी की मात्रा से ही संतुष्ट रहता है। इसी प्रकार जब हमारा हृदय आध्यात्मिकता से शुद्ध हो जाता है, तो हमें अपने आप में आनंद और परमानंद मिलता है जो इतना मधुर, इतना अद्भुत और इतना संतुष्टिदायक होता है कि इस दुनिया के तथाकथित सुखों का अब कोई मूल्य नहीं रह जाता है, कोई आकर्षण नहीं रह जाता है।

सफलता

- अगर हम सही इरादे से सही काम करते हैं तो वही वास्तव में हमारी सफलता है।
- किसी भी रिश्ते में समस्याओं के परे जाने का तरीका अपना ध्यान उच्च सिद्धांतों पर केंद्रित करना है जो हमें उनसे पार पाने में मदद कर सकते हैं।
- वास्तव में सफल व्यक्ति वही है जो जीवन की हर स्थिति में एक सकारात्मक अवसर देखता है।
- सफलता की कुंजी सरल हृदय होना है।

प्रेम

- विश्वास के बिना प्यार नहीं हो सकता और विश्वास तब तक नहीं हो सकता जब तक हम इस तरह से कार्य करने की ज़िम्मेदारी नहीं लेते कि लोग हम पर भरोसा कर सकें।
- प्रेम का अर्थ है त्याग, प्रेम का अर्थ है सेवा। जब तक हमारे अंदर भोग करने की व्यक्तिगत, अहंकारी इच्छा है, तब तक संघर्ष चलता रहेगा, और हम पूरे दिल से एक-दूसरे से प्यार नहीं कर सकते।
- हम जो हासिल करते हैं उसके लिए लोग वास्तव में हमसे प्यार नहीं करते। लोग वास्तव में हमें हमारे चरित्र के लिए प्यार करते हैं।
- सच्ची खुशी और आनंद के लिए दुनिया को शोषण से सेवा, अहंकार से विनम्रता, स्वार्थी क्रूरता से करुणा और घृणा से प्रेम की और बदलाव की आवश्यकता है।
- हम अपनी आंखों के सामने प्रेमियों, दोस्तों और परिवारों के बीच प्रेम की शक्ति को प्रकट होते देखते हैं। लेकिन प्रेम की शक्ति का स्रोत, सार पूर्ण अभिव्यक्ति आत्मा के परमात्मा या ईश्वर के प्रति प्रेम में है।

श्री रामकुमार नप्ते
लेखाकार



स्मृति के झरोखों से

जिन्दगी की हर खुशी तेरे सिवा कहीं नहीं,
उलझी गणित भी हल हुई तेरे सिवा कहीं नहीं ।
सोचा की देख लूँगा, तुझे पास से बहुत,
ढूँढा तुझे बहुत तेरे सिवा कहीं नहीं ।।
जिन्दगी की हर खुशी

आहों की आह लेकर, जलता चला गया ।
हर दर्द के गरल को पीता चला गया ।।
डर था कहीं इस जिन्दगी की शाम न हो जाए,
जीवन में अर्थ पाया, तेरे सिवा कहीं नहीं ।
जिन्दगी की हर खुशी

कस्ती पड़ी थी मेरी, इस नदी के किनारे,
भवरों के डर से हमने न पॉव को पसारे ।
संवल जुटा-जुटा के तुमने दिये सहारे ।
पतवार यदि मिली तो, तेरे सिवा कहीं नहीं ।।
जिन्दगी की हर खुशी

सबसे बचा-बचाके, तुझे पूजता रहा ।
इस यज्ञ के सिवा, न मुझे कुछ सूझता रहा ।।
परमार्थ के सहारे, आया था इस सदन में,
रखा तुझे छुपा के, अपने सजल नयन में ।
खुशियाँ मिली सब धाम की, तेरे सिवा कहीं नहीं
जिन्दगी की हर खुशी

मेरी दुवा के साथ, तू बस शख्सियत बढ़ाना ।
इतना उठाना सर को, कि देखे तुम्हे जमाना ।
ख्वाइश है सिर्फ इतनी, तेरे लिए जियूँ मैं ,
अगर जिन्दगी मिले तो, तेरे सिवा कहीं नहीं ।।
जिन्दगी की हर खुशी



श्री सुशील कुमार यादव
लेखाकार

दिल भूखा है

दिल भूखा है
माँ के हाथ के खाने के लिए,
पापा की डाँट के लिए,
टिचर के शाबाशी के लिए,
दोस्तों के साथ के लिए ।

दिल भूखा है ...
बच्चों के प्यार के लिए,
(क्यूँ की आजकल सारे बच्चे व्यस्त जो हो गए)
पति के प्यारी आवाज के लिए
जैसे “मेरा चश्मा ला दो, मोबाईल कहाँ है ?”
यही ज्यादा पूछा जाता है ।

दिल भूखा है ...
किसी के समझाए जाने के लिए
“कोई नहीं, मैं हूँ ना”
ऐसे वादे के लिए ।

दिल भूखा है ...
किसी कंधे के लिए
(जहाँ दो आँसू गिराए जा सके)
बिना मतलब के, की हुई मदद के लिए ..

दिल भूखा है ...
सुनने वाले कान के लिए
(कोई सुनता कहाँ है, सब तो बस सुनाते रहते हैं)
आश्वासन भरी नजरों के लिए
“छोड़ो ये टेंशन, चलो पार्टी करते हैं”
ऐसी माँग के लिए

दिल भूखा है...
ताजी साँस के लिए ।



श्रीमती पूर्णिमा सुनील कुकडे
सहायक पर्यवेक्षक

मुझे गर्व है

नमस्ते दोस्तो,

आज आपसे कुछ ऐसी बातें शेयर करने का मन हुआ जो कुछ समय से मेरे मन को बेचैन किया हुआ है।

हाँ, दोस्तो, मुझे गर्व है अपने सिंधी होने पर, जब-जब अपने माता-पिता, सास-ससुर से सिंधी की बातें सुनती हूँ, तब दिल रो उठता है। वैसे कोई अपना सब कुछ, जी हाँ! सब कुछ माल मिलकियत पैसा, मकान, सवारे अहम, अपने घर, अपने मुल्क से जुड़ी यादें, अपनी सभ्यता को भूलकर पीछे छोड़कर आज भी जिंदा है।

आँख बंद करके जब वह लम्हे जो हमारे पूर्वजों ने बिताए हैं, कि कल्पना करती हूँ, तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मुझे अच्छी तरह से याद है, मेरी माँ ने कहा था कि माताजी जो कि सिर्फ 9/10 साल की थी जब वे स्टीमर शिप में हिंदुस्तान की तरफ लौट रहे थे। तब छोटी नाव से शिप पर चढ़ते समय उनका पैर फिसल गया और वे पानी में गिरते गिरते बची, कैसे उन पर अत्याचार किया गया, कैसे औरतों और बच्चियों का बलात्कार किया गया। कहानियाँ सुनने में रोचक लगती हैं, लेकिन ये भयानक हादसे अपने दिल में संभाले हमारे पूर्वजों ने हिंदुस्तान में आने के बाद नए सिरे से नए जगह पर अपनी सभ्यता और मेहनत के बीज बोकर नयी दुनिया बनाई।

किसी भी काम को छोटा न मानते हुए हर पाई कमा के बचा के आज ऐसे मकाम पे पहुँचे हैं जो न कि सराहनीय है बल्कि तारीफ़ के काबिल है।

अगर मुंबई में ही देखें तो बड़े से बड़े अस्पताल बनाने में सिंधी औद्योगिकों ने न सिर्फ सिंधी भाई, बहनों बल्कि देश के सभी मानवों के लिए मिसाल कायम की है तथा देश के विकास में भी बढ़ोतरी की है।

एक बार ऑफिस में अपने स्टाफ की छुट्टियों की सिफारिश करते-करते मन में विचार आया कि मेरा होम टाउन क्या होगा, सोचते-सोचते अचानक एक ख्याल आया, उन्हीं दिनों अपने कार्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान परंपरागत वेशभूषा में मैंने भाग लिया और मैंने भी एक कला पेश किया।

किस्सा कुछ ऐसा था कि मैंने सपने में देखा कि मैंने एक अर्जी प्रशासन को पेश किया, जिस में मैंने लिखा कि मुझे पाकिस्तान में होम टाउन विज़िट के लिए मंजूरी दी जाए। प्रशासन ने मुख्यालय के साथ पत्रव्यवहार किया जिसका नतीजा मुझे बताने ही वाले थे, मैं

वो पत्र खोलने लगी इतने में दरवाजे की घंटी बजी और दूधवाले ने मेरा सपना ही तोड़ दिया।

आज तक मुझे वह पता नहीं चला है कि क्या मुख्यालय ने मुझे होम विज़िट में पाकिस्तान जाने की अनुमति दी है या नहीं, क्योंकि मेरा टाउन होम बटवारे में पाकिस्तान से जुड़ गया।

सब बातों की एक बात, हाँ! मुझे गर्व है अपने सिंधी होने पर और अपने भारतीय नागरिक होने पर।



श्रीमती एम. एच. कुंदनानी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



बेटियाँ

ओस की एक बूँद सी होती है बेटियाँ।
खुखुराओं तो रो देती है बेटियाँ।
रोशन करेगा बेटा तो एक ही कुल को,
दो-दो कुलों की लाज निभाती है बेटियाँ।
कोई एक दूजे से कम नहीं,
हीरा अगर है बेटा तो मोती है बेटियाँ।
काँटों की राहों पर खुद चल देती हैं,
पर औरों के लिए फूल खिलाती है बेटियाँ।
विधि का विधान है, यहीं दुनिया की रस्म,
यदि बेटा है आँख, तो पलक है बेटियाँ।
जीवन का यही सारांश है बेटियाँ।
बेटी, धन पराया होती है, यह हम सुनते आये हैं,
कहने को पराई अमानत है बेटियाँ,
पर बेटों से भी बढ़कर अपनी होती है बेटियाँ।



श्री मृत्युंजय कुमार
लेखाकार

अविस्मरणीय मंगलमय यात्रा

मंगलमय यात्रा की शुरूवात अद्भुत अनुभवों से होती है। यह यात्राएं हमें नए स्थानों के अन्वेषण, विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन और स्वयं का आत्मर्पण करने का मौका देती है। नए जगह घूमने से हम न केवल अपनी यात्रा पिपासा को तृप्त करते हैं बल्कि हमें नए स्थानों, विचारों और अनुभवों के बारे में भी जानने को मिलता है जिससे हमारी ज्ञान के विस्तार में भी वृद्धि होती है।

इस यात्रा पिपासा को शांत करने के लिए मैं सपरिवार सबसे पहले मथुरा दर्शन के लिए गई थी। मथुरा में कई दर्शनीय स्थल हैं जैसे श्री कृष्ण जन्मभूमि, बांके बिहारी मंदिर, प्रेम मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर एवं गोवर्धन पर्वत आदि हैं। जिसमें हमने श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर, प्रेम मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर का दर्शन किया। श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर में हमने भोग भी ग्रहण किया जो बहुत स्वादिष्ट था। चूंकि हम जून महीने में गए थे और मथुरा में गर्मी बहुत थी, इसलिए हम वृन्दावन और अन्य जगह ज्यादा नहीं घूम पाएँ। प्रेम मंदिर की सुंदरता (अविर्चनीय) है, क्योंकि वहाँ की वास्तुकला, स्थापत्यकला का कोई तोड़ नहीं है।

मंदिर का सुंदर आकर्षण, उसकी मर्मक छत्रिकाएं और विशाल द्वार है, जो मंदिर को अद्वितीय बनाते हैं साथ ही वहाँ भक्ति भावना तथा शांत माहौल भक्तजनों को बहुत आकर्षित करती है। कृष्ण जन्मभूमि मंदिर में बाल गोपाल, श्री कृष्ण की जन्म की झाँकियाँ मुझे बहुत मनमोहक लगी। ये सारे दृश्य बहुत सजीव जान पड़ते थे।

मथुरा के बाद हम जम्मू व कटरा की ओर प्रस्थान कर दिये। जैसा कि हम सभी जानते हैं माता वैष्णो देवी की यात्रा बहुत ही प्रसिद्ध है। यह यात्रा जम्मू व कश्मीर राज्य के त्रिकुट पर्वत पर स्थित माता वैष्णो देवी के मंदिर को जाने के लिए की जाती है। हमने जम्मू में होटल बुक किया था। वहाँ हम लोग शाम को पहुंचे थे। सभी को थोड़ी बहुत थकावट हो गयी थी, इसलिए हमने सुबह कटरा जाने का निर्णय लिया। हम सुबह पाँच बजे जम्मू से कटरा टैक्सी पकड़ कर गए। वहाँ कटरा पहुंच कर हम बाणगंगा से लगभग 6.30 बजे माता वैष्णो देवी के दरबार हेतु पैदल यात्रा शुरू कर दिये। वैसे यहाँ से घोड़े, पालकी, बच्चों और सामान के लिए पिडू और हेलीकॉप्टर की भी सुविधा है। हेलीकॉप्टर कटरा से सांझी छत तक जाता है। सांझी छत से भवन की दूरी लगभग 3 किलो मीटर है। फिर वहाँ से श्रद्धालु अन्य उपलब्ध साधन से भवन तक जा सकते हैं। हमने बाणगंगा से पैदल यात्रा करने का ही निर्णय

लिया। सबसे पहले हमने एक-एक डंडा और बारिश से बचने के लिए पोलिथीन के बने रेनकोट खरीदा। चढ़ाई करते समय सपोर्ट के लिए यह डंडा बहुत जरूरी होता है। यह यात्रा बहुत ही रोचक रही। सभी लोग 'प्रेम से बोलो जय माता दी' के जयकारो की गुंजन में डूब आगे बढ़ रहे थे जिससे यात्रा में उत्साहवर्धन हो रहा था।

माता वैष्णो देवी तीर्थ स्थान पर प्रबंधन हेतु साइन बोर्ड द्वारा तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर यात्री निवास, भोजन का प्रबंधन और भी सुविधाएं उपलब्ध कराई गयी है। सभी भक्ति में सराबोर हो गए थे। रास्ते में चरणपादुका मंदिर के दर्शन हुए। कहा जाता है कि इस स्थान पर कन्या रूपी माता वैष्णो कुछ समय के लिए रुकी थी। हम रास्ते में खान-पान करते हुए आगे बढ़ रहे थे ताकि ऊर्जा का भी बराबर संचार रहे। हम दोपहर में अर्धकुमारी पहुंचे और वहाँ लगभग एक घंटा विश्राम किए। पौराणिक कथा के अनुसार अर्धकुमारी को गर्भजून के नाम से जाना जाता है। कथा के अनुसार जब भैरवनाथ माँ वैष्णो का पीछा करते हुये त्रिकुटा पर्वत की अनिर्वचनीय श्रृंखला तक पहुँच गया तब माँ अर्धकुमारी गुफा को विश्राम करने के लिए चुना था। वहाँ हमने अर्धकुमारी के दर्शन के लिए कूपन कटवाए। अर्धकुमारी दर्शन हेतु कूपन लेना पड़ता है और जब आपका नंबर आता है तभी दर्शन कर सकते हैं। हमारे नंबर बहुत दूर थे इसलिए हमने सोचा वैष्णो देवी दर्शन से वापस आने के समय अर्धकुमारी के दर्शन करेंगे। इस तरह हमने माता वैष्णो देवी के दर्शन के लिए वहाँ से प्रस्थान कर गए और शाम को लगभग 8.00 बजे वैष्णो देवी मंदिर पहुंचे।

फिर हम वहाँ स्नान करके माता के दर्शन के लिए लाइन में लग गए, लाइन लंबी थी लेकिन जल्दी ही इंतजार के पल खत्म हुये और हम पहुँच गए वैष्णो देवी के मुख्य द्वार पर। माता के दर्शन कर हम सभी भाव विभोर हो गए। सारे दर्द और थकावट मिट गए। माता रानी के दर्शन कर हमारे पैदल यात्रा का महत्व पूरा हुआ। इसके बाद हम वही स्थित भवन हॉल में रात बिताए फिर सुबह हम भैरव बाबा के दर्शन हेतु हम रोप वे से गए। यहाँ खड़ी चढ़ाई अधिक होती है इसलिए हमने रोप वे से जाना उचित समझा। रोप वे से हम तीन मिनट में भैरव बाबा के मंदिर पहुँच गए। माना जाता है कि भैरव बाबा के दर्शन के बिना यह यात्रा पूरी नहीं होती है। इसी मान्यता के अनुसार माता के भक्त उनके दर्शन के पश्चात 3.5 किलोमीटर की और चढ़ाई करके भैरवनाथ के दर्शन के लिए जाते हैं जिससे माता वैष्णो देवी के दर्शन का पूरा लाभ मिल सके। अब

हम नीचे जाने के लिए तैयार हो गए। वहाँ से हम बैटरी वाली गाड़ी से नीचे अर्धकुमारी आए। अभी भी अर्धकुमारी के दर्शन हेतु हमारा नंबर नहीं आया था। फिर हम वापिस नीचे आने का निर्णय लिए। वहाँ से हम नीचे उतरने के लिए पैदल यात्रा शुरू कर दिये। कटरा में ही हमने होटल बुक किया था, वहाँ जाकर सभी आराम किए। सभी लोग थक चुके थे। रात्री का भोजन करके सभी निद्रा के गोद में समा गए। सुबह हमारी थकावट पूरी मिट चुकी थी। इसलिए सभी को खरीदारी करने का मन था, कटरा के मार्केट में बहुत विविधताएँ थी, हम सभी ने वहाँ खरीदारी की। उसके बाद हम वापिस जम्मू के लिए रवाना हो गए। अब हमारी अगली यात्रा शुरू होनी थी - अमृतसर की यात्रा।

जम्मू से रात 12 बजे अमृतसर के लिए ट्रेन थी। हम अमृतसर सुबह ही पहुँच गए। वहाँ होटल में रुके थे। वहाँ से हम नहा धोकर स्वर्ण मंदिर (गोल्डन टेंपल) गए। गोल्डन टेंपल सरोवर के बीचों-बीच है। इसे श्री हरमंदिर साहिब व दरबार साहिब भी कहा जाता है। पूरा स्वर्ण मंदिर सफेद संगमरमर से बना हुआ है और इसकी दीवारों पर सोने की परत चढ़ाई गयी है। इस सरोवर को अमृत सरोवर और अमृत झील के नाम से जाना जाता है।

स्वर्ण मंदिर एक बहुत ही खूबसूरत मंदिर है। इसमें रोशनी की सुंदर व्यवस्था है। वहाँ पहुँच अद्भुत शांति का अनुभव हो रहा था। यहाँ विश्राम स्थल के साथ ही चौबीस घंटे लंगर चलते हैं, जिसमें कोई भी प्रसाद ग्रहण कर सकता है। गुरुद्वारे के आसपास कई अन्य महत्वपूर्ण स्थान हैं। थड़ा साहिब, गुरुद्वारा शहीद बंगा बाबा जैसे छोटे गुरुद्वारे स्वर्ण मंदिर के आसपास स्थित हैं। उनकी भी अपनी महता है। नज़दीक ही ऐतिहासिक जालियांवाला बाग है। स्वर्ण मंदिर में दर्शन के बाद हम वहीं जालियांवाला बाग गए, जहाँ जाकर शहीदों की कुर्बानियों की यादें ताजा हो गयी, वहाँ जनरल डायर की क्रूरता की निशानियाँ मौजूद हैं। इसके बाद हम वहीं पास में ही लालदेवी माता का मंदिर था जो बहुत सुंदर था। लालदेवी माता जी एक संत थी जिन्हें उनके मानने वाले पूज्य माता जी कहते हैं, उनकी याद में ये मंदिर बनाया गया है जो कि दो मंजिला है और इस मंदिर की खास बात थी कि यहाँ पर कई मुख्य मंदिरों तथा उनके पूज्य विग्रहों की प्रतिकृति है।

माता वैष्णो देवी मंदिर की प्राचीन गुफा की हूबहू कापी यहाँ पर है तो जगन्नाथ पुरी जी का पूरा देव परिवार यहाँ पर मौजूद है। इसे जम्मू के वैष्णो देवी मंदिर का मिनिएचर वर्जन माना जाता है। मंदिर

की नक्काशी बहुत सुंदर है। इस मंदिर में शीशे की नक्काशी देखकर इसे शीश महल भी कहा जा सकता है। सभी ज्योतिर्लिंग और सभी देवियों के स्वरूप यहाँ पर हैं। जितनी मेहनत और पैसा लगाकर ये मंदिर बना हुआ है, उससे इसे देखने आने वालों की मेहनत सफल हो जाती है। गुरुद्वारे से कुछ ही दूरी पर भारत-पाक सीमा पर स्थित वाघा सीमा एक अन्य महत्वपूर्ण जगह है।

यहाँ भारत और पाकिस्तान की सेनाएँ अपने देश का झण्डा सुबह फहराने और शाम को उतारने का आयोजन करती हैं। यहाँ प्रवेश का समय 3 बजे लगभग था तथा समारोह 5 बजे शुरू हुआ। यहाँ परेड भी हो रही थी। यह परेड समारोह 30 मिनट की होती है। यह समारोह देशभक्तों और उत्साही भर्तियों से खचाखच भरा हुआ था। कार्यक्रम की शुरुवात परेड से होती है, यह भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के सैनिकों द्वारा की जाती है, सैनिक अपने पैरों को जितना संभव हो उतना ऊपर उठाकर मार्च करते हैं। वहाँ सबसे पहले महिलाएं और बच्चे राष्ट्रीय ध्वज लहराते हैं और देशभक्ति गीतों पर नृत्य करते हैं। यह सारा दृश्य बहुत उत्साहवर्धक होता है। सभी जय हिन्द और वंदे मातरम के ऊंचे नारों से सैनिकों का उत्साहवर्धन करते हैं। समारोह दोनों पक्षों के सैनिकों के बीच एक संक्षिप्त हाथ मिलाने के साथ समाप्त होता है। यहाँ आने पर गर्व की भावना महसूस होती है। कार्यक्रम समाप्त होने पर सभी सैनिकों की जय-जयकार करते हैं और राष्ट्रगान गाते हैं। इसके बाद हम अपने होटल में वापस आ गए। यहाँ पास में ही एक और प्रसिद्ध मंदिर था श्री दुर्गीयाना मंदिर, जिसे लक्ष्मी नारायण मंदिर भी कहा जाता है। देखने में ये स्वर्ण मंदिर जैसा लग रहा था। इस मंदिर में मुख्य देवी दुर्गा है, फिर भी यह भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित है। मंदिर एक सरोवर के बीच स्थित है। यहाँ भी अद्भुत शांति का अनुभव हो रहा था। इसी के साथ आज का दिन भी समाप्त हो गया। हम रात में वही होटल में ही रहे। सुबह होटल चेकआउट किए। अमृतसर से मुंबई के लिए हमारी ट्रेन 12 बजे दोपहर में थी। यह यात्रा यहीं समाप्त होती है।

इस तरह मथुरा, कटरा, अमृतसर की यह यात्रा मेरी अविस्मरणीय मंगलमय यात्रा बन गयी। जहाँ हमें धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभव मिला।



श्रीमती निशा कुमारी
कनिष्ठ अनुवादक

मेहनत का फल

एक गाँव में एक मजदूर रहा करता था जिसका नाम रामलाल था। उसके परिवार में कोई नहीं था। दिनभर अकेला मेहनत करता था। दिल का बहुत ही दयालु और कर्मों का भी बहुत अच्छा था। रामलाल ने जब से होश संभाला था, तबसे बिलकुल अकेला ही था। उसे अपने माँ-बाप के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। सब लोग उसे रामू कहके पुकारते थे। हर कोई उसे अपना काम बताता था। वो किसी को भी मना नहीं करता था। इस लिए वह सभी लोगों का चहेता था। मजदूर था इसलिए उसे उसका भोजन मजदूरी के बाद ही मिलता था। वो हमेशा अपने भोजन में से कुछ निवाले बचाकर कुत्ते को खिलाता था जो हमेशा ही उसके झोपड़ी के अगल-बगल में टहलते रहते थे। उसके आगे पीछे कोई ना था इस लिये वह इस आजीविका से संतुष्ट था। रामलाल नियमित रूप से गाँव के शंकर भगवान के मंदिर में जाता था। उस मंदिर का मंगलमय वातावरण और पुजारी से प्रसाद पाना उसे बहुत पसंद था। हर रोज रामू मंदिर का परिसर को साफ करता था। कभी-कभी मंदिर के बड़े-बड़े झाड़ को पानी देना, उनकी मरम्मत करना, उसे बहुत अच्छा लगता था। बड़ी लगन से भगवान के चरणों में फूल अर्पित करके ही घर लौटता था। इसी वजह से मंदिर के पुजारी और अन्य भक्तगण उसे पहचानते थे। रामू को मंदिर, उसके घर की तरह सहारा देता था।

एक बार उसे मंदिर के बगल में एक छोटा सा बछड़ा और एक बूढ़ी औरत बेसहारा अवस्था में बैठी हुई दिखाई दी। दोनों दुखियारे लग रहे थे। मानो उनका इस दुनिया में कोई न हो। रामू उनके पास चला गया और उन्हें भगवान का प्रसाद, कुछ फल देने लगा। उस बुढ़िया ने फल तुरंत खा लिए मानो कई दिनों से भुखी हो पर बछड़े को देने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। उसने बूढ़ी औरत से पूछ-ताछ की, कि वह कहाँ रहती है, कहाँ से आई है? पर वह इतनी कमजोर थी कि उससे ढंग से बात भी नहीं कर पा रही थी। दयालु रामू को उस पर दया आ गयी और वह उन्हें अपने घर ले आया। उनकी रहने, खाने-पीने की व्यवस्था की। वैसे तो उसके पास खुद के खाने के भी कमि थी। फिर भी उसने अपनी माँ की तरह उनका खयाल रखा। छोटे से बछड़े के लिए अपनी झोपड़ी के बाहर ही गोठ बना लिया। हर रोज बछड़े के लिए साफ सुथरा पानी और हरा-भरा चारा लाया करता था। अब रामू को घर में माँ का प्यार मिलने लगा। बूढ़ी औरत अब रामू के झोपड़े में आराम से रहने लगी। रामू को वह घर पर आते ही गरम गरम रोटियाँ बनाकर खिलाती। उसके साथ बातें करती। रामू भी माँ को मंदिर ले जाता

था। कभी-कभी माँ के पैर दबा देता था। उसने कभी अपनी माँ को देखा नहीं था, पर अब उसे घर का सुख और माँ का प्यार दोनों का अनुभव होने लगा।

गोठे में बछड़ा भी बड़े आराम से रहने लगा। उसने खुशी से उसे पाला और सोचा आज तक वह अकेला था अब वह इस बछड़े को अपने बेटे के जैसे पालेगा। रामलाल का दिन उसके बछड़े से ही शुरू होता और उसी पर खत्म होता वह रात दिन उसकी सेवा करता और उसी से अपने मन की बात करता। बछड़े को रामू हर रोज नदी किनारे घूमने लेकर जाता था। खुली हवा में बछड़ा आराम से टहलता था और हरा भरा चारा भी खा लेता था। कभी-कभी रामू उसे मंदिर भी लेकर जाता था, वहाँ उसे मंदिर का प्रसाद भी खाने मिलता था। अब रामलाल का जीवन पहले से अलग हो गया। अब उसके पास खुशी से जीने की वजह बन गई थी। वह अपने बछड़े का खास ध्यान रखता था। मानो वह उसका अपना बेटा हो। गाँव में भी सभी लोग दोनों को देखकर खुश होते थे। रामू और शामू की जोड़ी गाँव में प्रचलित होने लगी। कुछ समय बाद बछड़ा बैल बन गया। उसकी जो सेवा रामलाल ने की थी उससे वह बहुत ही सुंदर और बलशाली बन गया था। गाँव के सभी लोग रामलाल के बैल की ही बातें किया करते थे। किसानों के गाँव में बैलों का भरमार था पर रामलाल का बैल उन सबसे अलग था। दूर-दूर से लोग उसे देखने आते थे, हर कोई रामलाल के बैल के बारे में बातें कर रहा था।

रामलाल भी अपने बैल से बेटे की तरह प्यार करता था। भले खुद भूखा सो जाये लेकिन उसे हमेशा भर पेट खिलाता था। एक दिन रामलाल के स्वप्न में शिव का नंदी बैल आया उसने उससे कहा कि “रामलाल तुम एक निस्वार्थ सेवक हो। तुमने खुद की तकलीफ को छोड़ कर अपने बैल की सेवा की है इसलिए मैं तुम्हारे बैल को बोलने की शक्ति दे रहा हूँ। इतना ही नहीं तुम्हारा बैल भारी सशक्त रहेगा, उसमें सौ बैलों की ताकत रहेगी। तुम्हारे सभी अच्छे कार्यों में वह तुम्हारा साथ देगा”। इतना सुनते ही रामलाल जाग गया और अपने बैल के पास गया। उसने बैल को सहलाया और मुस्कुराया कि भला एक बैल कैसे बोल सकता है। तभी अचानक आवाज आई, “बाबा आपने मेरा ध्यान एक पुत्र की तरह रखा है, मैं आपका आभारी हूँ और आपके लिए कुछ करना चाहता हूँ”। यह सुनकर रामलाल घबरा गया। उसने खुद को संभाला और तुरंत बैल को गले लगाया। उसी समय से वह अपने बैल को नंदी कहकर

पुकारने लगा । दिनभर काम करके आता और नंदी से बाते करता ।

गरीबी की मार बहुत थी । नंदी को रामलाल भर पेट खाना देता था । लेकिन खुद भुखा सो जाता था । यह बात नंदी को अच्छी नहीं लगता था । उसने रामलाल से कहा कि वह नगर के सेठ के पास जाए और शर्त रखे कि उसका बैल नंदी सौ गाड़ी खींच सकता है और शर्त के रूप में सेठ से हजार मुहरें ले ले । रामलाल ने कहा “नंदी तू पागल हो गया है । भला कोई बैल इतना भार वहन कर भी सकता है । मैं अपने जीवन से खुश हूँ । मुझे यह नहीं करना”, लेकिन नंदी के बार-बार आग्रह करने पर रामलाल को उसकी बात माननी पड़ी ।

एक दिन डरते-डरते रामलाल सेठ हरिप्रसाद के घर पहुँचा । हरिप्रसाद ने उससे आने का कारण पूछा तब रामलाल ने शर्त के बारे में कहा । सेठ जोर जोर से हँसने लगा । बोला रामलाल बैल के साथ रहकर क्या तुम्हारी मति भी बैल जैसी हो गई है । अगर शर्त हार गए तो हजार मुहर के लिये तुम्हें अपनी झोपड़ी तक बेचनी पड़ेगी । यह सुनकर रामलाल और अधिक डर गया लेकिन मुँह से निकली बात से मुकर भी नहीं सकता था ।

शर्त का दिन तय किया गया और सेठ हरिप्रसाद ने पुरे गाँव में ढोल पिटवाकर इस प्रतियोगिता के बारे में गाँव वालों को खबर दी और सभी को यह अद्भुत नज़ारा देखने बुलाया । सभी खबर सुनने के बाद रामलाल का मजाक उड़ाने लगे और कहने लगे कि यह शर्त तो रामलाल ही हारेगा । यह सब सुनकर रामलाल को और अधिक डर लगने लगा और उसे नंदी से घृणा होने लगी । वह उसे कोसने लगा । बार-बार उसे दोष देता और कहता कि “क्यों मैंने इस बैल को पाल लिया । मेरी अच्छी भली कट रही थी इसके कारण सर की छत से भी जाऊँगा और लोगों की थू-थू होगी वो अलग” । अब रामलाल को नंदी बिलकुल भी रास नहीं आ रहा था ।

वह दिन आ गया जिस दिन प्रतियोगिता होनी थी । सौ माल से भरी गाड़ियों के आगे नंदी को जोता गया और गाड़ी पर खुद रामलाल बैठा । सभी गाँव वाले यह नज़ारा देख हँस रहे थे और रामलाल को बुरा भला कह रहे थे । रामलाल ने नंदी से कहा “देख तेरे कारण मुझे कितना सुनना पड़ रहा है । मैंने तुझे बेटे जैसे पाला था और तुने मुझे सड़क पर लाने का काम किया” । रामलाल के ऐसे घृणित शब्दों के कारण नंदी को गुस्सा आ गया और उसने ठान ली कि वो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ायेगा और इस तरह रामलाल शर्त हार गया । सभी ने उसका मजाक उड़ाया और उसे अपनी

झोपड़ी सेठ हरिप्रसाद को देनी पड़ी ।

अब रामलाल नंदी और माँ के साथ मंदिर के बाहर पड़ा हुआ था और नंदी के सामने रो रोकर उसे कोस रहा था । उसकी बातें सुन नंदी से सहा नहीं गया और उसने कहा, बाबा रामलाल यह सब तुम्हारे कारण हुआ । यह सुन रामलाल चौंक गया । उसने गुस्से में पूछा कि “क्या किया मैंने ? तुमने भांग खा रखी है क्या”? तब नंदी ने कहा कि “तुम्हारे प्रेम के बोल और अच्छे कर्मों के कारण ही भगवान ने मुझे बोलने और ढेर सारी शक्ति दी और मैंने तुम्हारे लिये यह सब करने की सोची । लेकिन तुम उल्टा मुझे ही कोसने लगे और मुझे बुरा भला कहने लगे । तब मैंने ठानी, मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं करूँगा । लेकिन अब मैं तुमसे फिर से कहता हूँ कि मैं सौ गाड़ियाँ खींच सकता हूँ । तूम जाकर फिर से शर्त लगाओ और इस बार अपनी झोपड़ी और एक हजार मुहरों की शर्त लगाना” ।

रामलाल के दिल को यह बात अच्छी नहीं लगी और फिर से शर्त हारने का डर भी लगता है । पर अब उसके पास रहने के लिए झोपड़ी भी नहीं बची थी । नंदी और बुढ़ी माँ को लेकर वह मंदिर में कब तक रह पाता था । उसे अपनी हालत सुधारने के लिए कुछ तो करना ही था । रामलाल की हालत देख मंदिर के पुजारी ने उसे सलाह दी की वो सेठ हरिप्रसाद के पास जाकर, उसे मनाकर, अपनी झोपड़ी वापस मांग ले । फिर चाहे उसके लिए सेठ के पैर भी पड़ने पड़ें । बड़े धीरज से वो सेठ हरिप्रसाद के पास पहुँचा और अपनी झोपड़ी को वापस देने की विनंति । सेठ हरिप्रसाद धनिक था और वह एक अच्छे इंसान भी थे । उन्होंने अपने जीवन में हमेशा जरूरतमंद लोगों की मदद की थी ।

रामलाल के विनंति के अनुसार सेठ हरिप्रसाद झोपड़ी वापस देने को राजी हो गए । रामलाल इसके बदले में सेठ हरिप्रसाद के लिए कुछ करना चाहते थे और उसने सेठ को अपनी दिल की बात भी बताई । सेठ हरिप्रसाद को नंदी बहुत ही पसंद था और रामलाल जैसे ईमानदार इंसान को वो अपने पास रखना चाहता था । रामलाल मेहनती इंसान था इसलिए सेठ ने अपने खेतों का मुखिया बनाकर अपने लिए काम करने के लिए पूँछा । रामलाल को सेठ की बात सुनकर रोना आया । वो तो सिर्फ अपनी झोपड़ी मांगने गया था, यहाँ तो उसके रोजी रोटी का भी बंदोबस्त हो गया । उसने सेठ का प्रस्ताव अपनाकर, उनके चरण पकड़ लिए । अब नंदी और रामलाल सेठ के खेतों में काम करने लगे । धीरे-धीरे रामलाल

माँ

उसके अच्छे बर्ताव और लगन से काम करके सेठ का बाया हाथ बन गया। मानो उसकी जिंदगी सँवर गई।

कहानी की शिक्षा :

प्रेम की बोल, सच्चाई, काम की तरफ ध्यान और मेहनत से जीवन सफल होता है। कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि जीवन में प्रेम से ही किसी को जीता जा सकता है। कहते हैं प्रेम और ईमानदारी के सामने ईश्वर भी झुक जाता है, इसलिए सबसे प्रेम और आदरतापूर्वक बात करनी चाहिए।



श्रीमती हेमांगी ग. बारसकर
सहाय्यक पर्यवेक्षक



छोटा सा गाँव मेरा

छोटा सा गाँव मेरा, पूरा बिग बाजार था
एक नाई, एक मोची और एक लुहार था ...
छोटे-छोटे घर थे, हर आदमी बड़ा दिलदार था।
कहीं भी रोटी खा लेते, हर घर में भोजन तैयार था।
बाड़ी की सब्जी मजे से खाते थे जिसके आगे शाही पनीर बेकार था।
दो मिनट की मैगी नहीं थी, झटपट दलिया तैयार था।
नीम की निम्बोली और शहतुत सदाबहार था
छोटा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ...
अपनासा घड़ा कस के बजा लेते थे, पूरा गाँव संगीतकार था।
मुल्तानी माटी से तालाब में नहा लेते, साबुन और स्विमिंग पूल बेकार था।
और फिर कबड्डी खेल लेते हमें कहाँ क्रिकेट का खुमार था।
दादी की कहानी सुन लेते, कहाँ टेलीविजन और अखबार था।
भाई-भाई को देख के खुश था, सभी लोगों में बहुत प्यार था।
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था।



श्री नरेंद्र कुमार
लेखाकार

संसार में जन्म लेने के बाद सबसे पहले क्षण, सर्वप्रथम होते हैं इसी के दर्शन।

संतान की ही भलाई के बारे में सोचती रहती है हर वक्त।
यही कारण है जिसके लिए वे कहलाती है
दुनिया में जिंदगी की सबसे बड़ी दौलत।।
मुसीबत में जब कभी मन हो जाता है बेबस।
यही प्रदान करती है मन को साहस।।

नाउम्मीदी के बादलों के छा जाने के कारण,
जब विचलित हो जाता है मन।
मन को हिम्मत देकर, मन को दिखानी है उम्मीद की किरण।।
जब किसी भावनात्मक कारण में जाता है खुशियों का सूरज ढल।
तब हमारे आसुओं को पोछता हैं इसीका आंचल।।
किसी उदासी के कारण जब विचलित हो जाता है मन।
सांत्वना पाने का स्थान - इसी का दामन।।
हर वक्त संतान की सहायक, जब संतान हो जाती है बेबस।
यही कुछ कारण हैं जिनकी वजह से उसके लिए मनाया जाता है
मातृ दिवस (Mother's Day)।।

करती है अपने संतान के दिल की चोरी।
नींद की श्रेष्ठ दवा - इसकी लोरी।।
श्रेष्ठ व्यक्ति - देने के लिए संतान को जरूरत के समय पर
जरूरत का बोध (ज्ञान)
नींद का श्रेष्ठ स्थान - इसकी गोद
संसार की माँ - गंगा और धरती
सारे संसार में किसी में भी, कोई भी भेदभाव कभी नहीं करती।
धरती - सारे संसार का भरण पोषण करती
गंगा - पापियों के पाप धो कर उन्हें निष्पाप करती।



श्रीमती पुष्पा एम. निमजे
सहायक लेखा अधिकारी

गाँव और शहर

तेरी बुराइयों को हर अखबार कहता है ...

और तू मेरे गाँव को गंवार कहता है ...

ऐ शहर मुझे तेरी औकात पता है,

तू चुल्लु भर पानी को वाटर पार्क कहता है ..

थक गया है हर शख्स काम करते-करते,

तू इसे अमीरी का बाजार कहता है ...

गाँव चलो वक्त ही वक्त है सबके पास,

तेरी सारी फुर्सत तेरा इतवार कहता है ...

मौन होकर फोन पर रिश्ते निभाए जा रहा है,

तू इस मशीनी दौर को परिवार कहता है ...

जिनकी सेवा में बिता देते सारा जीवन,

तू उन माँ-बाप को खुद पर बोझ कहता है ...

वो मिलने आते थे तो कलेजा साथ लाते थे,

तू व्हाट्स अप ग्रुप को रिश्तेदारी कहता है ...

बड़-बड़े मसले हल करती यहां पंचायतें,

तू अँधी भ्रष्ट दलीलों को दरबार कहता है...

बैठ जाते हैं अपने पराये साथ बैलगाड़ी में,

पूरा परिवार भी ना बैठ पाये उसे तू कार कहता है ...

अब बच्चे भी बड़ों का आदर भूल बैठे हैं,

तू इस नये दौर को संस्कार कहता है ...

जिंदा है आज भी गाँव में देश की संस्कृति,

तू भूला के अपनी सभ्यता, खुद को तू शहर कहता है ... !!

शहर घुमता है काले चश्मे लगाकर,

गाँव अब भी नजर मिला लेता है !!

शहर बीमार होता है दवाओं से

गाँव बीमारी में भी खुद को जिंदा रखता है !!

शहर से घर को लोग खाली हाथ लौट जाते हैं,

गाँव में लोग बर्तन भी खाली नहीं लौटाते हैं !!

नकली चेहरे गाँव में भी हैं मगर उनकी आँखें सच्ची हैं,

शहर की भीतरी शोर से आटाचक्की की पुक पुक पुक अच्छी

है !!

गाँव में देखो मुस्कुराती है फूलगोबियों

शहर ने पहले बाल रंगे फिर हरी सब्जियां !!

पर देखा है मैंने थोड़ा सा शहर घुस रहा है गाँव में

कोई कर रहा है छेद नाव में !!

एसी की कमी गिना रहा है पीपल भी छाँव में,

पहिया पलायन का बाँध लिया है पाँव में !!

मेरी दुआ है खूब तरक्की करे यह जमाना,

मगर गाँव की लाश पर शहर न उगाना !!

शहर बसा के गाँव ढूँढते हैं

हाथ में कुल्हाड़ी लेकर छाँव ढूँढते हैं !!

धन्यवाद !!!



श्री योगेश यादव
डी. ई. ओ. ग्रेड - बी



सपने

सच में सच होते हैं सपने ?

सुख आते हैं घर में बसने ?

भाग्य, कर्म से क्या बड़ा होता है ?

नहीं, फिर प्रश्न सा क्यूँ खड़ा होता है ?

जीवन में बस एक संघर्ष प्रबल है ।

पौरुष का ही यह संसार एकल है ।

सभी दर्शन में यह प्रकट प्रखर है ।

भाग्य, कर्म का अनुचर है ।

सपनों का तो संसार पृथक है ।

कोरी कल्पना व एक मिथक है ।

भाग्य कभी क्या रहकर होता है ।

पराक्रम मनुज का सहचर होता है ।

सपने तो, सब सपने होते हैं ।

दिन अच्छे तो, सब अपने होते हैं ।

कर्म हीन से जब रब रूठा हो, फिर

अपने भी कब अपने होते हैं ।

श्री पिन्टू कुमार
लेखाकार



सौंदर्यता, मन और हम

सौंदर्यता जिसे अंग्रेजी में ऐस्थेटिक (aesthetic) कहते हैं इस बारे में अपनी निजी राय प्रस्तुत कर रहा हूँ। यहाँ मुझे किसी भी धर्म को या उनकी मान्यताओं को व्यक्त करना अभिप्रेत नहीं है। मेरा प्रयास है सौंदर्यता की खोज करना। आपसे निवेदन है कि इसे आखिर तक जरूर पढ़ें।

जैसे ही यह विषय मैंने चुना मुझे एक हिन्दी गीत याद आया जिसे साहिर लुधियानवी जी ने लिखा है और आशा भोंसले का गाया हुआ है,

तोरा मन दर्पण कहलाए

भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाये

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय

मन उजियारा जब-जब फैले, जग उजियारा होय

इस उजले दर्पण पे प्राणी, धूल न जमने पाएँ

तोरा मन दर्पण कहलाए

इसके साथ ही इस विषय को सहायक जगतगुरु श्री वल्लभाचार्य द्वारा रचित मधुराष्टकम की दो पंक्तियाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

अधरम मधुरम वंदनम मधुरम नयनम मधुरम हसिदम मधुरम ।

हृदयम मधुरम गमनम मधुरम मधुराधिपते रखिलम मधुरम ।

इसमें वल्लभाचार्य जी श्री कृष्ण के बारे में कहते हैं उनके होंठ मधुर है, चेहरा मधुर है, नयन मधुर है, मुस्कान मधुर है, हृदय मधुर है, मधुरत्व के स्थायी श्रीकृष्ण का सबकुछ मधुर है।

आप सोचते होंगे की यहां दूसरों की लिखी हुई पंक्तियाँ क्यों प्रस्तुत की जा रही है ? अब मैं इन पंक्तियों की और 'सौंदर्यता' तथा 'हम' का संकेत क्या है इसके बारे में मेरी राय प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इसलिए मैं पहले अपने रोजमर्रा के उदाहरण दे रहा हूँ।

एक स्कूल जाता बच्चा जब उसे नयी किताबें तथा कापियां मिली तो वह उसे पहले बहुत ही कलात्मक / आकर्षक कवर लगाता है और उसके बाद अपने सबसे अच्छे अक्षरों से अपना नाम लिखता है और बड़ी सावधानी से अपने बस्ते में रखता है।

एक व्यापारी भी अपने बही खातों को सँवारता है।

एक वारली समाज की स्त्री अपने बाँस जैसी डंडियो से घर बनाती है और उस पर मिट्टी से दीवारे बनाती है। जिस पर गेरू से दीवार को कैनवास बनाती है उस पर बहुत ही आकर्षक बारली पेंटिंग (चित्र) बनाती है और वह सही अर्थ में पवित्र मंदिर बनता है।

एक स्त्री सुंदर सा पेहनाव करके, बालों में फूलों का गजरा लगाती है तब सुन्दरता का अहसास होता है।

देवी देवताओं की अलंकार आभूषित मूर्तियाँ / प्रतिमा देखते हैं तो मानवी सौंदर्यता का अहसास होता है, नज़रे तृप्त हो जाती हैं और हमारे पैर वहाँ से हटने का नाम नहीं लेते।

हम वीणा सितार जैसे वाद्य देखते हैं तो उस पर बारीक नक्काशी अपनी ओर आकर्षित करती है।

किसी इमारत को देखते हैं तो बस हमें देखते रहने का मन करता है, ऐसा क्यों ?

एक स्त्री घर के सामने रंगोली बनाती है, आँगन स्वच्छ करती है जैसे भी आओ भगवान यहाँ पधारो।

किसी मंदिर के गुम्बद और खंबों पर बनी हुई नक्काशी देखते हैं तो मनुष्य को कल्पकता का अमर्याद स्वरूप सामने आता है।

एक कविता जब सुर ताल में गाया जाता है तो सौंदर्यता का अहसास होता है।

यहाँ तक मैंने जो भी लिखा उसमें नया क्या है ? कुछ भी नहीं, लेकिन रुकिये सुनना जरूरी है। सोचिये सौंदर्यता किस तरह किसी भी व्यक्ति को या भौतिक चीजों को अमूल्य बना देती है। यह अमूल्य कब बन जाती जब हमें उससे प्राप्त ऊर्जा का अहसास होता है। सोचिये यह सौंदर्यता असल में कहां छिपी हुई थी जो कलात्मक मन के कारण समझ आ जाती है। अर्थात् मन से कला का उद्गम हुआ और सौंदर्यता जो मन ने ग्रहण की थी वह प्रकट हुई। इसका मतलब यह हुआ कि जहां भी हमें इस तरह के सौंदर्यता के उदाहरण मिलते हैं तो उसके पीछे हमारे बुद्धि ने जो ग्रहण किया था, उसे मन में उतारा गया और कला के माध्यम से मन द्वारा सौंदर्यता का साक्षात्कार करवाया।

लेकिन मैंने तो इस लेख का शीर्षक सौंदर्यता मन और हम दिया है इसकी वजह क्या है ? इसलिए हमें कुछ हद तक इस शास्त्र की ओर जाना पड़ेगा।

जीवन में सत्यम् शिवम् सुंदरम् से साक्षात्कार करने में सौंदर्यता की प्रमुख भूमिका होती है। यह व्यक्ति सापेक्ष होती है, उसके मान्यता अनुसार वह बदलती है, सौंदर्यता व्यक्ति के अन्तर्मन में होती है जिसे वाह्यस्वरूप हर भौतिक चीजों में पाते हैं। यहीं से हमें समस्त जग को सौंदर्यपूर्ण बनाने की प्रेरणा मिलती है।

सौंदर्यता एक प्रभावी संवाद का माध्यम है। जिसके कारण संवाद की सारी बाधाएँ हट जाती हैं। हम पाते हैं कि कोई कलाकृति हमारी आत्मा को संतुष्ट करती है, इस तरह के विषय पर हो सकता है, लाखों किताबें लिखी गई हो और आगे लिखी भी जाएगी। मुझे इन सब से यह बताना है कि सौंदर्यता अपनी सुंदर मन के साथ हमारे रोजमर्रा के जीवन में कैसे अमूल्य बदलाव ला सकती है और हमें अमूल्य भी बना सकती है। यह सोचो आप जिस चीज की कल्पना करो उसे किस तरह कला की सहायता से अनमोल बनाया जा सकता है। कुछ छोटे मोटे बदलाव करने से हमारा घर एक मंदिर की भांति हमारी अंतर्मात्मा को तृप्त करता है। यह सबकुछ अपनी कल्पना पर निर्भर करता है। मर्यादाएँ भी आ सकती हैं लेकिन उससे बाहर निकलने का रास्ता भी खोजा जा सकता है। मैंने जैसे शुरू में ही लिखा है तोरा मन दर्पण कहलाए तथा मधुराष्टकम्। जिस तरह हम घर को सुंदर बनाते हैं वैसे ही हमारे कार्यालय को और अधिक सुंदरता से भरा जा सकता है सभी के साथ हमें अपना योगदान सच्चे अंतर्मन से देना है। यहाँ हम जीवन का आधे से ज्यादा समय बिताते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम हमारा कार्यालयीन माहौल को सुंदरता से भरें। अपने टेबल से शुरूआत करने की जरूरत है सारी फाइलों को एवं किताबों को ठीक से सही जगह रखने की जरूरत है। अनावश्यक किसी भी कागज को या कचड़े को अपनी नजरों से दूर करके सही जगह पर भिजवाना है। जो संसाधन उपलब्ध हैं उनका उपयोग करके हमारे कार्यालय के माहौल को साफ सुथरा बनाना है।

जैसे मधुराष्टकम् में कहा गया है कि हमारे पास सुंदर मन है, सुंदर शरीर है, सुंदर हृदय है, माँ भारती के सुंदर संस्कार हैं। चले इन संसाधनों से हमारे कार्यालय को सौंदर्यता प्रदान करें। हमारी छाप छोड़ दें। हमें प्रसन्नता से इसे करना है।

यह यात्रा अन्तर्मन से शुरू होकर बाह्य जगत को सौंदर्यता से सवरकर सम्पन्न हो जाती है।

शुभं भवतु।



श्री आबासाहेब विठ्ठल जगताप
सहायक लेखा अधिकारी

कागज की नाव

बीत गए होंगे कोई बीस साल इस बात को,
जब हम पहली बार मिले थे

इरादा कुछ और नहीं बस जिताना था
अपनी अपनी नाव को

याद है जो कागज की नावें हमने
बारिश के पानी में साथ छोड़ी थी ?

तुम्हारी नाव पहुँचने ही वाली थी उस पेड़ तक
मैं हार रहा था ...

याद है तुम्हारी उस नाव को मैंने ही डुबाया था ... ?
मैं छुपकर हँसते हुए तुम्हें रोता देख रहा था ...

ना जाने कब मेरे हँसते गालों पर आँसू आ बैठे ...
याद है वो तुम्हारे आँसू थे ?

हारी तो तुम थी पर जीता मैं भी नहीं था तब
मेरी नाव भी कभी उस पेड़ तक नहीं पहुँची,

गौर किया तुमने ?

हम दोनों ही साथ रोए, हम दोनों ही हारे
शायद मेरी ही वजह से

और सदियों से गुजरे ये चार साल,
जब हम आखिरी बार मिले

इरादा अब भी तुम्हें जीताने का था।

पर इस बार तुम हारी नहीं छोड़ गयी
मैं फिर से हार गया ...

जानता हूँ जीती तुम भी नहीं

और फिर से उस रात रोयी,
तुम भी थी, रोया मैं भी था ...

फिर से मेरी ही वजह से

काश मैं तुम्हारी कश्ती ना डुबाता

ना तुम रोती ना मैं

काश मैं जीत की धुन ना लगाता ...

ना तुम हारती ना मैं



श्री गौरव शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

मैं मुंबईकर हूँ

जब मुंबईकर भारत के बाहर यात्रा करता है तो एक खास बात उनके साथ घटित होती है। वे नयी जगह पर कुछ समय तक तो ठीक रहता है परंतु बाद में अस्वस्थ महसूस करने लगता है, घबराने लगता है, कांपने लगता है, मछली की तरह फर्श पर छटपटाने लगता है, शायद बेहोश होने लगता है, बीमारी से नहीं बल्कि मुंबई के बाहर जीवन की गति की कमी के कारण ऐसा होता है।

जिस सुकून और शांति की कामना हम यहां करते हैं वही यहां से दूर जाने के कुछ ही दिनों में हमें पागल बना देती है। मैं पिछले आठ वर्षों से हर साल बोस्टन, युएसए का दौरा कर रही हूँ और ये भावना आज तक कभी नहीं बदली। जब मैं लोगन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पर उतरती हूँ तो हमेशा अपनी बेटी, दामाद और परिवार के दो नए सदस्यों (मेरे प्यारे पोतों) को देखकर बहुत खुश होती हूँ। मैं उन्हें हमारी मुंबई की कहानियाँ सुनाने को उत्सुक रहती हूँ। मैं उनके लिए अपने हाथों से ढेर सारे व्यंजन (विशेषकर दक्षिण भारतीय खाना) बनाकर खिलाने की योजना बनाती हूँ।

यकीन मानिए एक महीने में सारा उत्साह ठंडा पड़ जाता है। बोस्टन में चार्ल्स नदी, खिलते फूलों और बर्फ से ढकी सड़कों को निहारने और परिवार के साथ कुछ दिन बिताने के लिए पर्याप्त है फिर मुंबईकरों के लिए अपने सैमसंग फोन लेकर और उसमें संदेश देखना एक नशे की तरह है।

हो सकता है, ये कहने में अतिशयोक्ति हो कि मुंबई किसी इंसान के दिमाग पर क्या प्रभाव डालती है। हम सभी मुंबई में अपनी रोजमर्रा की जिंदगी की भागदौड़ और पागलपन से नफरत करते हैं। लगातार भागदौड़, चीजों का अचानक गड़बड़ हो जाना, कहीं भी पहुँचने के लिए कम से कम डेढ़ घंटे का समय, लगातार तीन चार फोन कॉल, अपने बॉस के साथ बातचीत की जद्दोजहद और नौकरानी द्वारा रोटियाँ जलाना और काँच के कटोरे तोड़ना, उन प्रतिस्पर्धियों के साथ बने रहने का दबाव जो हमेशा आपसे आगे रहते हैं, महत्वकांक्षा जो हम में से सबसे आलसी लोगो में भी घर कर जाती है।

इन चीजों से जब पागल हो जाती हूँ तो मेरी स्वाभाविक प्रतिक्रिया बोस्टन और न्यूयॉर्क खूबसूरत शांत स्थानों की तस्वीरों को देखने की होती है। जहाँ मैं हाल ही में गयी थी। मैं अपनी बेटी की बालकनी से ली गयी तस्वीरों को बहुत लालसा से (जबकि मेरी बालकनी में मेरा तत्काल दृश्य पड़ोसियों के अंडरगारमेंट्स सूखने का है) उसी कामना से देखती हूँ जितना युवा लोग नए मोबाइल को देखते हैं।

फिर भी, जब मैं वहां थी तो मेरे दिमाग के पीछे कुछ ऐसा था, जैसे मुंबई को एक छोटी सी चिप मुझमें लगी हो, जो मुझे बताने लगती है, “मैंने बालकनी से इस खूबसूरत बगीचे को बहुत देर तक देखा है। मुझसे कुछ छूट रहा है। मुझसे क्या छूट रहा है? व्हाट्स अप कहाँ है? यहीं मुझे बताएगा। मेरी वापसी की फ्लाइट कब है? क्या मैं उससे भी पहले जा सकती हूँ!”

कोई नहीं जानता कि मुंबई कब और कैसे प्लांट करता है। कोई अन्य भारतीय शहर यह चिप प्लांट नहीं करता है। बैंगलुरु की मेरी भाभी जब न्यूयॉर्क जाती है तो उत्सुकता से नहीं घबराती हुई जाती है, ना ही चेन्नई से मेरी समधन। फिर भी सब मुंबईकर जानते हैं कि ये कब होता है। आमतौर पर किसी शांत जगह पर कुछ दिन रहने के बाद, शांति के साथ भारी बेचैनी, शांति के भीतर अधीरता से हम एक मुंबईकर को पहचान सकते हैं।

बोस्टन एक शक्तिशाली शहर है, जहां फूलों से भरे पेड़, हरे भरे दृश्य, बगीचे, चार्ल्स नदी, विश्वविद्यालय और इसकी प्रमुख सड़के हैं। आपको हमेशा ऐसे लगता है जैसे आप येशूदास के संगीत कार्यक्रम के लिए जा रहे हैं। बोस्टन में कहीं मेहनत करते युवा हैं और तकनीकी रूप से समृद्ध हैं, लेकिन कभी भी बहुत अधिक उन्मत्त महसूस नहीं करता है। शायद कोपले में बड़े कोच के कार्यालय, शायद नॉर्थ ईस्टर्न यूनिवर्सिटी के पास डाउनटाउन की आधुनिक वास्तुकला के बाद मदद करें लेकिन नहीं।

बेशक न्यूयॉर्क उत्साह और मौजमस्ती का प्रतीक है। आप भी सभी महत्वपूर्ण स्थानों (टाइम्स स्क्वायर, मैडम तुसाद, डबल्यूटीसी मेमोरियल, एंपायर स्टेट बिल्डिंग) का दौरा करें, परिवार के साथ भोजन करें (खाने की कोई कमी नहीं है) और फिर पूछो “अब क्या?” जिसका जवाब आमतौर पर ना और नहीं है।

आप न्यू जर्सी में इधर-उधर दौड़ सकते हैं लेकिन यह एक मूर्खतापूर्ण काम होगा क्योंकि और कोई ऐसा नहीं कर रहा है।

यह मुझे उस शहर के साथ छोड़ देता है जिसने राष्ट्र की अधीरता के भंडार की भूमिका निभाई थी।

हर बार जब मैं मुंबई से बाहर जाती हूँ, तो एक महीने तक यह शांत और शांत रहता है और फिर चिप गुलजार रहती है और वापसी तक मुझे परेशान करती है। मैं जिस भी शहर में जाती हूँ, वहां खामियां ढूंढने का अहंकार भी पनपने लगता है।

अंधेरी की मेरी एक मित्र ने एक बार मुझे अपनी विपासना यात्रा की एक महान कहानी सुनाई थी जो यहाँ मेरे दृष्टीकोण का प्रतीक है। वह अव्यवस्था से जूझ रही थी और शांत रहने के लिए इस एकांतवास में जाने के लिए एक सप्ताह की छुट्टी चाहती थी। दूसरे दिन के बाद वह बेसब्री से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रही थी जिसे वह रिश्त दे सके और उसने कहा कि वह अपने आई-फोन का उपयोग करने के लिए कोई भी कीमत चुकायेगी।

एक मुंबईकर के रूप में अगर मुझे हमेशा व्यस्त रहने / किसी चीज को पाने के लिए अपने आराम के क्षेत्र से बाहर निकाल जाए, तो मुझे नहीं पता होगा कि अन्य वातावरणों में सामाजिक रूप से कैसे कार्य किया जाए। हां, मैं एक मुंबईकर हूँ।



**श्रीमती रेवती गणेश
वरिष्ठ लेखा अधिकारी**



कहाँ गए वो दिन

कहाँ गए वो दिन उगते सूरज के साथ,
चीं चीकरते चिड़िया की चहचहाट की।
ढलती सांझ की लाली के साथ,
निकलते चाँद और तारों की चमचमाहट की।।

कहाँ गए वो दिन दादी - नानी के
आसमान तले तारों के नीचे
लोरी और किस्से राजा रानी के।।

कहाँ गए वो दिन बचपन के
कंधे पर हाथ धरे एक के पीछे एक खड़े
छुक-छुक करते डिब्बे रेलगाड़ी के।।
कहाँ गए वो दिन दोस्तों और यारों के
हाथों में हाथ लिए कदम से कदम मिलाए
नदी के किनारे साथ बैठे पेड़ों के छाँव तले।।

कहाँ गए वो दिन शोर मचाने के
घर-घर जाकर दूँद-दूँद सबको बुलाने के
एक साथ गाँव से स्कूल तक जाने और आने के।

कहाँ गए वो दिन साथ भाई और बहनों के,
मस्ती के आलम और खेल खिलौने के।
रूठने और मनाने के एक ही थाली में खाने के,
बड़ों की डाट से एक - दूसरे को बचाने के।।
कहाँ गए वो दिन झिम-झिम करती बरसतो के,
भीगते कूदते और फाँदते नदी और नालों के।
कागज की कश्ती बना गली आँगन में बहाने के,
बुट्टे के पट-पट कर, अंगेठी में पका कर खाने के।।
कहाँ गए वो दिन गर्मी के गरम हवाओं के
पीपल के छाँव तल दोपहर गुजार आने के
पके-पके रस भरे पेड़ आम और जामुन के।।
कहाँ गए वो दिन ठंड के मौसम में गर्मी सूरज की
ख्वाहिश परिवार संग पिकनिक मनाने की
खेत-खलियानों से बैलगाड़ियों में अनाज घर लाने की।।

कहाँ गए वो दिन बचपन के प्यार का,
माँ की लोरी और थपकी प्यार से सुलाने का।
बाबा के कंधे पर बैठ पूरा गाँव घूम आने का,
दुनिया की सबसे अच्छी सवारी कर आने का।।
कहाँ गए वो दिन बेफिक्री के आलम का
सांझ ढले चैन की नींद सो जाने का,
देर सुबह उठ सुस्ती की अंगड़ाई लेने का।।
छूट गए वो सभी दिन पीछे, उम्र और जिम्मेदारियों के नीचे।
गुजर गए वो दिन बचपन का, अब दिन है नए जमाने का।
अपनों के लिए जीने और उनकी उम्मीदों को पूरा कर जाने का।



**श्री रितेश कुमार वर्मा
लेखाकार**

मोबाइल है मेरी जान

मोबाइल का नाम सुनते ही सबके मन में एक अलग ही खयाल आता है। मोबाइल फोन आज हम सबके जीवन का अभिन्न और अहम अंग बन गया है। जीवन की तीन मूलभूत सुविधाओं के साथ अब मोबाइल चौथे स्थान पर आ गया है। हमारे दिन की शुरुआत भी मोबाइल फोन से होती है और अंत भी। अब बच्चे तो बच्चे, बड़ों को भी इसकी आदत लग गयी है। मोबाइल फोन को कभी कभी “सेल्युलर फोन” भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से एक दूसरे से बातचीत के लिए उपयोग किया जाने वाला उपकरण है।

मोबाइल का अविष्कार अमेरिकी इंजिनियर मार्टिन कूपर ने सन 1973 में मोटोरोला कंपनी के साथ मिलकर किया था। उसके बाद निरंतर मोबाइल में अलग-अलग तकनीक के साथ काफी बदलाव हुए हैं। वर्तमान में तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। आज एक मोबाइल फोन की मदद से हम दुनिया भर में किसी से भी आसानी से बात कर सकते हैं या वीडियो चैट कर सकते हैं। आज मोबाइल फोन अलग-अलग आकृति और आकारों में उपलब्ध है, जिसमें विभिन्न तकनीकी फीचर्स हैं और वह कई उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। जैसे - वॉइस कॉलिंग, वीडियो चैटिंग, टेक्स्ट मैसेजिंग, इंटरनेट ब्राउजिंग, ईमेल, वीडियो गेम, सोशल नेटवर्क और फोटोग्राफी आदि। इसलिए इसे ‘स्मार्ट फोन’ भी कहा जाता है।

मोबाइल की वजह से आज हमारा काम बड़ा ही आसान हो गया है। आज मोबाइल फोन में बातचीत करने के साथ-साथ संगीत सुनने, फोटोग्राफी करने तथा गणना करने की भी सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। इतना ही नहीं आज इसका उपयोग जैसे कंप्यूटर की तरह किया जा रहा है। मोबाइल फोन पर ही इंटरनेट की सुविधाओं का लाभ उठाया जा रहा है। मोबाइल फोन एक दूसरे के संपर्क साधने में सहायता करता है तथा इसे कैलकुलेटर के रूप में भी देखा जा सकता है। इसका उपयोग हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक कोई भी संदेश भेजने के लिए भी करते हैं।

आज व्हाट्सएप, फेसबुक और इन्स्टाग्राम जैसे ऐप के माध्यम से हम नए नए दोस्त बना सकते हैं और साथ ही अपने दोस्तों और परिवारों के साथ जुड़े रह सकते हैं। जिससे हम हर समय हर पल की जानकारी ले सकते हैं। इसके उपयोग से घंटों काम जैसे चुटकी भर में हो जाते हैं। पैसों का लेनदेन हम आजकल मोबाइल से ही कर रहे हैं, जिससे हमें बैंक जाना नहीं पड़ता है।

आज के समय में मोबाइल हर किसी की जरूरत बन गया है। मोबाइल की मदद से लोग वीडियो बनाने, गाना सुनने और फोटो

खींचने जैसे मनोरंजन का काम कर सकते हैं। लेकिन जब हम इतने उपयोग की बात कर रहे हैं, तो साथ-साथ एक बात पर गौर करना होगा। मोबाइल जितना लाभदायक है उतना ही वह हानिकारक है।

बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ाई पर कम ध्यान देते हैं और ज्यादातर मोबाइल पर गेम खेलते रहते हैं, इससे उनके पढ़ने की क्षमता पर असर पड़ जाता है। कितने सारे लोग सोशल मिडिया पर अपनी निजी जानकारी देते हैं, जिससे उन्हें गलत गतिविधियों का खतरा रहता है। अलग-अलग क्षमता और नई तकनीक वाले मोबाइल बाजार में लगातार आने की वजह से लोग पुराना मोबाइल बार-बार बदलते रहते हैं। इसके चलते उन्हें कभी आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

यदि हम मोबाइल से थोड़ी भी देर दूर रहे, तो एक बेचैनी से होने लगती है और यह लत मोबाइल की स्क्रीन को बार-बार टच करने से लेकर किसी भी सोशल मीडिया ऐप जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, यूट्यूब, किसी की भी हो सकती है। कभी इसका इस्तेमाल सड़क दुर्घटना को भी जन्म देती है। व्यक्ति फोन पर बात करते हुए वाहन चलाते हैं या फिर बात करते-करते रास्ते पर चलता है, जिससे दुर्घटनाएं होती हैं। कभी-कभी यह दुर्घटनाएं इतनी बड़ी होती हैं कि इसमें व्यक्ति की मृत्यु भी हो जाती है।

रिसर्च में साबित हुआ है कि मोबाइल फोन से बहुत ही खतरनाक रेडिएशन निकलती है। मोबाइल फोन निकलने वाले इस खतरनाक रेडिएशन से नन्हे बच्चों के दिमाग में ट्यूमर हो सकते हैं जो आगे चलकर कैंसर जैसी घातक बीमारी के रूप में बदल सकती है। शहर में लगाये गये बड़े मोबाइल टॉवर की वजह से वातावरण में नकारात्मक बदलाव आ जाते हैं।

अब बात निकलती है कि मोबाइल इस दुनिया के लिये श्राप है या फिर वरदान ? सारे उपयोग और नुकसान पे अगर गौर किया जाये तो एक बात सामने आती है कि यदि हम मोबाइल का उपयोग सही तरीके से करें तो उसके जैसा दुसरा कोई लाभदायक उपकरण नहीं है। पर यदि उससे होनेवाली हानि तथा नुकसान के तरफ हम ध्यान न दे तो भविष्य में कई बड़ी कठिनाईयों का हमें सामना करना पड़ सकता है।

बस आखिर में लाखों जुबां से निकलेगी यही एक बात “ये दिल है मुश्किल है इसके बिना, यह है मोबाइल ... यह है मोबाइल ... यह मोबाइल ... यह मोबाइल मेरी जान.....



श्री विनय भास्कर राणे
वरिष्ठ लेखकार

लक्ष्मणभार्या

जब हम रामायण सुनते हैं तो श्रीराम के दुष्टिकोण से ही सुनते या पढ़ते हैं। इससे हम हर रिश्ते में श्री रामजी के अनुकरणीय व्यवहार, सीता के त्याग, लक्ष्मण का अपने बड़े भाई के प्रति प्रेम और हनुमान की श्री राम के प्रति अटूट भक्ति को समझते हैं।

हम अहिल्या, शबरी, शूर्पणखा से लेकर बाली, सुग्रीव, जम्बुवन, अंगद और अन्य तक श्री राम के जीवन के सैकड़ों पात्रों को जानते हैं। लेकिन उर्मिला के बारे में जो बात प्रचलित है यह कि वह लक्ष्मण की पत्नी है।

इस उर्मिला के बारे में मुझे हमेशा से उत्सुकता रही है, लेकिन यहाँ मुझे उसके बारे में कुछ जानने को मिला। उर्मिला भी सीता की तरह जनकनंदिनी थी। स्वयंवर में सीता ने श्रीराम से विवाह किया, जहाँ राम के अन्य भाइयों का विवाह सीता की अन्य बहनों उर्मिला (सक्खी) और सुतकीर्ति और मांडवी (चचेरे) बहनों से हुआ था।

समय के साथ चारों शादियां बड़ी धूमधाम से मनाई गईं। नवविवाहित जोड़े खुश थे, राजा दशरथ अब शासन के सन्यास लेने के बारे में सोचने लगे। ऋषि विश्वामित्र और राजा दशरथ ने चौदह दिनों तक विचार किया और श्रीराम के राज्यभिषेक समारोह की योजना बनाई। जब रानी कैकेयी को मंथरे से यह बात पता चली तो उन्होंने राजा दशरथ से पहले मिले दो वरदानों का उपयोग करने का निर्णय लिया। तदनुसार यह निर्णय लिया गया कि श्री राम के राज्यभिषेक के बजाय, कैकेयी पुत्र भरत का राज्यभिषेक किया जाना चाहिए और श्री राम को चौदह वर्ष के लिए वनवास पर जाना चाहिए।

रानी कैकेयी की जिद से राजा दशरथ निराश हो गए और जैसा कि सभी जानते हैं, श्रीराम, सीता और लक्ष्मण वनवास के लिए चले गए।

जब उर्मिला को पता चलता है, तो वह भी अपने पति के साथ जाने का फैसला करती है, लेकिन लक्ष्मण उसे यह कहकर रोक देते हैं कि उसे अयोध्या में रहना चाहिए और सभी बड़ों की सेवा करनी चाहिए। असली कारण यह था कि युवा पत्नी को अपने साथ ले जाकर लक्ष्मण अपने कर्तव्य से विमुख हो जाते। दूसरे उनके रहने से लक्ष्मण चिंताएं भी कम हो गईं और लक्ष्मण ने यह शर्त रखा कि वह उनके की अनुपस्थिति में एक भी आँसू न बहाये। यह एक नवविवाहित के साथ बहुत अन्याय था।

लक्ष्मण, श्रीराम-सीता के साथ वन में चले गये। इधर उर्मिला विचलित थी, जनक ने उसे घर आने का सुझाव दिया, लेकिन उसने मना कर दिया।

जैसे ही श्रीराम ने अयोध्या छोड़ी, दशरथ ने वही 'राम-राम' कहते हुए प्राण त्याग दिए, लेकिन उर्मिला ने कोई आँसू नहीं बहाया।

उधर चलते हुए ये तीनों दंडकर्ण पहुंचे, जंगल में अपने प्रवास की पहली रात को लक्ष्मण ने श्री राम-सीता के लिए एक छोटी कुटिया बनाई। श्री राम और सीता आराम करने के लिए गुफा के अंदर चले गए और लक्ष्मण बाहर पहरा देते रहे थे। यह देखकर कि रात समाप्त होने के बावजूद भी लक्ष्मण को नींद नहीं आ रही थी, नींद के देवता लक्ष्मण के पास आये और उनसे पूछा कि उन्हें नींद क्यों नहीं आ रही है।

लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर निद्रादेवी से प्रार्थना की और उनसे 14 वर्षों तक बिना नींद के श्रीराम की सेवा करने का अनुरोध किया। वनवास के चौदह वर्षों के दौरान उन्हें सोना नहीं चाहिए जिससे सेवा में कोई कमी न पड़े। लक्ष्मण के भाई प्रेम को देखकर निद्रादेवी चकित हो गई और उन्हें वरदान देने के लिए तैयार हो गई। लेकिन प्रकृति के नियम के अनुसार किसी को तो लक्ष्मण की नींद लेनी ही थी। लक्ष्मण एक बार फिर से उर्मिला की शरण में आ जाते हैं और निद्रादेवी से उनके पास जाने के लिए कहते हैं। अतीत के बारे में सोचे बिना उर्मिला ने अपने पति की प्रतीक्षा में अपनी 14 साल की नींद लेने का फैसला किया, ताकि लक्ष्मण श्री राम-सीता की सेवा में जाग सके।

इसमें एक और दोष यह था कि श्रीराम-रावण युद्ध के दौरान रावण का पुत्र मेघनाथ अजेय था। मेघनाथ को एक ऐसे व्यक्ति के हाथों मोक्ष प्राप्त करना था जो 14 वर्षों तक सोया नहीं था। तो यह लक्ष्मण द्वारा प्राप्त किया जा सका। इसलिए लक्ष्मण दिन-रात बिना सोए और बिना थके भगवान श्रीराम की सेवा करने लगे और इधर उर्मिला 14 वर्षों तक दिन रात सोती रही।

लंका में रावण का वध कर सीता को मुक्त करने के बाद राम-लक्ष्मण-सीता अयोध्या लौटते हैं। राम के राज्यभिषेक समारोह के दिन लक्ष्मण जोर से हसते हैं। कारण पूछने पर वह कहते हैं कि भाग्य की विडम्बना यह है कि जिस राज्यभिषेक समारोह के लिए उन्होंने यह सब किया, वह समारोह उन्हें देखने को नहीं मिलेगा। क्योंकि निद्रादेवी के करार के अनुसार उनके सोने का और उर्मिला के जगाने का समय हो गया था। मेरा मतलब फिर से.....

तो ये है उर्मिला के त्याग और पति की वफादारी की कहानी। दक्षिण भारतीय राम कथाओं में उर्मिला की यह कहानी मिलती है। यह कथा वाल्मीकी की संस्कृत अथवा तुलसी की अवधी रामायण में नहीं मिलती है।



श्रीमती अनुपमा पंडीत
सहायक लेखा अधिकारी

महिलाएँ एवं वित्तीय प्रबंधन

आज के आधुनिक परिवेश में महिलाएँ जब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं वे अपनी परंपरागत भूमिका से आगे निकलकर करियर और वित्तीय नियोजन में सक्रिय रूप से शामिल हो रही हैं। वर्तमान समय में जरूरी है कि वे वित्तीय योजनाएँ बनाते समय अपनी आवश्यकताओं के साथ-साथ लक्ष्य एवं प्राथमिकताओं को भी निर्धारित करें। इसके लिए कुछ सुझाव मैं आप लोगों के साथ साझा करना चाहूँगी।

पहला कदम : सुरक्षित भविष्य की पहली सीढ़ी है बचत। ये किसी भी रूप में हो सकती है। बचत को सही जगह पर निवेश करना, आयकर, बीमा आदि के मुद्दों पर महिलाओं को जागरूक रहना चाहिए। विभिन्न ऑनलाइन संसाधनों की सहायता से महिलाएँ अपने वित्तीय ज्ञान को बढ़ा सकती हैं। यदि किसी मामले में कनफ्यूजन हो तो जरूरी है कि किसी न किसी सलाहकार की मदद ली जाए।

दूसरा कदम : आर्थिक लक्ष्यों को निर्धारित करना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि बचत करना। जिस प्रकार से कोई भी दो महिलाएँ एक जैसी नहीं हो सकती उसी तरह से उनकी आवश्यकता एवं जोखिम लेने की क्षमता एक जैसी नहीं हो सकती। वित्तीय प्रबंधक आपको सही तौर पर जानकारी देगा कि सेवानिवृत्ति के बाद सुखद भविष्य के लिए क्या क्या जरूरी है।

तीसरा कदम : बचत को सही समय पर सही जगह निवेश करना बेहद जरूरी है। नियमित तौर पर ऐसा करने से वे अपनी आय के अनुसार एक धन संचय को बना सकती हैं। उनकी जरूरतों को पूरी करने में सक्षम होंगी।

चौथा कदम : जब किसी के पास महीने के सभी खर्चों के बाद कुछ रकम बचती है तो जाहिर है कि चमक-दमक के प्रति आकर्षण हो जाता है जिससे की लज्जरी या लैविश जीवन जी सकें। इस मामले में जरूरी है कि भविष्य को सुरक्षित रखना है तो फिजूलखर्ची से बचें।

पाँचवा कदम : अपनी पहली ही वेतन के साथ वित्तीय सलाहकार की मदद से निवेश करना शुरू कर देना चाहिए। यदि आपको उसकी किसी भी सलाह पर कोई संदेह हो तो दूसरे या तीसरे से सलाह लेने में कोई हर्ज नहीं है। अमूमन सभी सलाहकार आपको पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF), म्यूचुअल फंड या RD में निवेश करने की ही सलाह देंगे जिससे कि समय रहते आप आसानी से बड़ा निधि तैयार कर पायेंगी और परिवार को आर्थिक रूप से

मजबूत कर पायेंगी। आज के युग में खुद को साबित करने के लिए ये जरूरी है।

छठा कदम : आजकल बाजार में कई तरह के स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध हैं। ऑनलाइन पोर्टल पर आप सभी बीमाओं की तुलना करके अपने लिए अच्छा सा फॅमिली फ्लोटर प्लान चुन सकते हैं। ये अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कई बार देखा गया है कि परिवार को अचानक किसी की बीमारी के इलाज के लिए खर्च करने में पूरी की पूरी बचत का स्वाहा हो जाता है। इलाज के भारी भारकन खर्चों से बचने के लिए वित्तीय प्रबंधक अक्सर इस बीमा को खरीदने की सलाह देते हैं।

सातवाँ कदम : हर व्यक्ति चाहता है कि उसका अपना फ्लैट हो। इससे एक फायदा यह होता है कि यदि एकमुश्त रकम महिलाएँ न भी दे पा रही हैं। तो इ.एम.आय. का विकल्प रहता है जिसमें की आपको आयकर पर भी छूट मिलती है। यदि गृह निर्माण कर्ज लिया है तो आपके लिए आवश्यक होगा कि किसी अच्छी बीमा कंपनी का टर्म प्लान अवश्य ले लें ताकि परिवार ई.एम.आय (मासिक किश्त) भरने वाले व्यक्ति के न रहने पर परिवार को एकमुश्त राशि मिल जाए और आपका मकान आपके न रहने पर भी सुरक्षित रहे।

आठवा कदम : बच्चों की उच्च शिक्षण, उनके विवाह इत्यादि लक्ष्य बेहतर वित्तीय प्रबंधन करके ही हासिल किए जा सकते हैं। इसके लिए बाजार में ढेर सारे विकल्प मौजूद हैं जिसके बारे में बेहतर जानकारी विभिन्न पत्रिकाओं एवं बिजनेस चैनल से अच्छी तरह से प्राप्त की जा सकती है।

ये सभी नुस्खे अपनाकर आजकल की स्वावलंबी महिलाएँ अपने वित्तीय नियंत्रण को बढ़ा सकती हैं और सफलता की ओर एक कदम आगे बढ़ सकती हैं।



श्रीमती तनुजा शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

युवाओं में बढ़ती असंतोष की भावना

किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र अथवा देश के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं। स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इन युवाओं से ही देश की वास्तविक पहचान होती है। जात, धर्म और भाषाई धारणाओं के साथ-साथ हमारे देश में कई और रूढ़िवादी धारणाएँ भी मौजूद हैं। ऐसी ही एक छवि हमारे युवाओं की भी है कि वे उग्रवादी, विद्रोही, विवेकहीन और अपरिपक्व होते हैं। यह सही है कि युवा बाहरी प्रभावों के प्रति असंवेदनशील होते हैं, बिना कुछ सोचे समझे किसी भी मामले में अपनी प्रतिक्रिया दे देते हैं और किसी भी बात की सत्यता जाने बगैर उस पर विश्वास कर लेते हैं यदि इसे इस तरह कहें तो अनुभवहीन होने के कारण किसी भी तथ्य की परख कम होती है और इसी बात का फायदा समाज में रहने वाले कुछ गलत लोग, उन्हें बहकाकर उठाते हैं और युवा उस दलदल में फंस कर अपना और समाज का नुकसान कर बैठते हैं। परन्तु इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि युवा केवल विध्वंस, हत्या, आक्रमण में ही विश्वास करते हैं। युवा जब देखते हैं, कि हमारे देश के राजनेता और नेतागण कहते कुछ और करते कुछ और हैं, जब नेता देशभक्ति और बलिदान की बात करते हैं और खुद अपना जीवन ऐशो आराम से बिताते हैं और नैतिकता की बात करते हैं और स्वयं अपराधों और समाज विरोधी तत्वों में सम्मिलित रहते हैं। जब वे शांति की बात करते हैं और स्वयं दलीय झगड़ों में आनंद लेते हैं, जब वे गरीबी की बात करते हैं और हमेशा समर्थन अमीरों का करते हैं। तो ऐसे में युवाओं का नाराज होना स्वाभाविक हो जाता है। युवाओं के मन में यह सवाल उठने लगता है कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है, हमारे साथ धोखा हो रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के युवाओं ने भ्रष्टाचार, असमानता, शोषण, राजनीतिक सांठ-गांठ, पुलिस की नृशंसता, प्रशासनिक निर्दयता, धार्मिक कट्टरवाद को बिना किसी सामाजिक विरोध के सहन किया है। वस्तुतः समाज में इतना अधिक असंतोष होता है, जो उत्तेजनापूर्ण आंदोलनों के लिए इंधन का काम करता है। पिछले कुछ दिनों में यह भी देखने में आया है कि राजनीतिक दल अपनी राजनीति को आगे बढ़ाने के लिये महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों को अपने जाल में फंसा कर उनका फायदा उठाते हैं। जिसके कारण युवाओं में आपस में लड़ाई झगडा होता है और वे अपना मूल कर्तव्य भूल कर एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने में लगते हैं। इन सभी कारणों से युवा नशे और

अपराध की ओर बढ़ने लगते हैं। युवाओं में बढ़ते असंतोष का एक कारण बेरोजगारी भी है। जब युवा अपनी पढ़ाई पूरी कर विद्यालय से निकलता है तो उसे रोजगार की आवश्यकता होती है। आज के समय में बेरोजगारी का आलम यह है कि पी.एच.डी किया हुआ युवा चतुर्थ वर्ग की नौकरी पाने में असमर्थ है। जब कि वहीं एक नेता जिसकी योग्यता कुछ भी नहीं है ऐशों आराम से रहता है।

एक साधारण युवा व्यक्तिवादी, कल्पनाशील और प्रतिस्पर्धी होता है। वह सिर्फ मार्गदर्शन की उम्मीद करता है, जिससे उसका उत्साह और जोश नियमित हो सके। युवाओं को एक निर्देश की जरूरत है। प्रौढ़ों, बुजुर्गों की यह स्वीकार करना पड़ेगा कि युवा समस्याओं का समाधान उन्हें साथ लिए बिना नहीं हो सकता है। इस लिए माता-पिता, शिक्षकों एवं शैक्षणिक प्रशासकों को युवाओं का सहयोग प्राप्त करना होगा। ऐसे प्रयास किए जाने चाहिए जिसमें युवाओं, शिक्षकों और शैक्षणिक प्रशासनिक के दिन-प्रतिदिन के संघर्षों में जो छोटे-छोटे उत्तेजक तत्व उत्पन्न होते हैं, वे विलीन हो जाए। प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में एक ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जो छात्रों के सवालों की पहचान करें और उनका समाधान करें। इस प्रकार की व्यवस्थाओं को केवल समस्याओं के भड़क जाने के बाद ही निपटाने की प्रक्रिया नहीं करनी चाहिए परन्तु निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए कि ऐसी घटनाएं जिसमें नियमों का उल्लंघन उत्पन्न होता है, रोकी जा सकें। ऐसी संस्थाओं की निरंतर बैठकें होनी चाहिए। सभी राजनीतिक दलों में छात्रों के राजनीति में भाग लेने के संबंध में एक आम आचार संहिता पर सहमति होनी चाहिए। यह उन्हें राष्ट्रीय विकास के भविष्य में दायित्वों का निर्वाह करने के लिए तैयार करेगी।

अब समय आ चुका है कि इस विशाल युवा शक्ति जो अब तक उपेक्षित रही है, को विकास के लिए एवं सामाजिक अन्याय को हटाने के लिए और राष्ट्रीय सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगाया जाए, अब वह घड़ी आ गयी है कि युवाओं को सामाजिक न्याय एवं विकास के लिए उन्हें आगे करें। युवाओं को राजनीति में भागीदारी के लिए हमारे देश के नेताओं और राजनीतिक पार्टियों को सोचना चाहिए, सामाजिक कार्यों हेतु युवाओं को प्रेरित करें और स्वयं समाज में एक ऐसी मिसाल बनाए, जिससे प्रभावित होकर देश के युवा सामाजिक एवं देश के कार्यों में अपना योगदान

देने के लिए सहर्ष तैयार हो जाए और समाज में फैले असंतोष को समाप्त करने की बात जगह-जगह जाकर बखूबी रख सके। दमन और टकराव के वातावरण के स्थान पर आशा, विश्वास और आस्था के वातावरण की आवश्यकता को समझना चाहिए, साथ ही युवाओं को सामाजिक विकास के लिए उन्हें प्रेरित भी करें। युवाओं को सामाजिक कार्यों में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाए, उनमें राष्ट्र प्रेम, समाज प्रेम की भावना विकसित किया जाए साथ ही उन्हें अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास कराया जाए और युवाओं को रोजगार प्रदान किया जाए ताकि युवाओं में बढ़ते असंतोष की भावना को कम किया जा सके और युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्र निर्माण में किया जाए और एक नवराष्ट्र का निर्माण किया जा सके।



श्री सत्येंद्र प्रताप सिंह
लेखाकार



महिला श्रमबल भागीदारी

हाल में मध्य प्रदेश सरकार ने 21 से 22 वर्ष आयु की अविवाहित बहनों को भी लाडली बहन योजना का लाभ देने की घोषणा की है। यानी आने वाले दिनों में इस योजना के तहत उन्हें भी प्रतिमाह एक हजार रुपये मिलने लगेंगे। वर्तमान में इस योजना में अविवाहित बहनों को लाभ देने का प्रावधान नहीं है। जाहिर है इस योजना के क्रियान्वयन से न केवल राज्य की महिलाओं और उन पर आश्रित बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार होगा, बल्कि वे पहले की अपेक्षा आर्थिक रूप से मजबूत भी होंगी। वे मिलने वाली आर्थिक सहायता से अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ आजीविका के संसाधनों को विकसित कर परिवार में लिए जाने वाले निर्णयों में अपनी अहम भूमिका निभा सकेंगी। भारत जैसे देश में महिला श्रमबल भागीदारी को सही मायनों में अर्थव्यवस्था के विकास का इंजन कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय महिलाएं आज अपने भविष्य को लेकर पहले से कहीं अधिक सजग हुई हैं। वे कुप्रथाओं की बेड़ियां तोड़कर अपनी मेहनत के दम पर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। 21वीं सदी में महिलाएं बड़ी संख्या में शिक्षक, नेता, इंजीनियर, प्रशासक, डॉक्टर, वैज्ञानिक बनकर

उच्च पदों पर पहुंच रही हैं। इसके अलावा रोजगार के अनेक क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाकर उन्होंने अपनी पहचान बनाई है। महिलाएं घर और बच्चों को संभालने के साथ-साथ नौकरी भी कर रही हैं। स्वाभिमान के साथ स्वावलंबन भी उल्लेखनीय है कि शहरी क्षेत्र में 55.9 प्रतिशत पुरुषों के मुकाबले केवल 13.6 प्रतिशत महिलाओं की श्रम बल में भागीदारी रही है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में 57.7 प्रतिशत पुरुषों के मुकाबले केवल 23.3 प्रतिशत महिलाओं की ही श्रम बल में हिस्सेदारी है। स्पष्ट है महिलाओं की श्रम में भागीदारी बढ़ी है, लेकिन पुरुषों की अपेक्षा बहुत कम है। यह बताता है कि आजादी के कई दशकों बाद भी आर्थिक स्वावलंबन में महिलाएं पीछे हैं। यही कारण है कि वे स्वयं के लिए भी आवश्यक खर्च नहीं कर पाती हैं। ऐसे में महिलाओं के प्रति सम्मान का स्तर बढ़ाकर और समानता की भावना लाकर उन्हें आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

देश के विकास में नारी शक्ति की संकल्प शक्ति, उनकी निर्णय शक्ति, त्वरित फैसले लेने की क्षमता, उनके परिश्रम और भारत के उत्थान में उनके योगदान को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। बहरहाल देश की आधी आबादी के सशक्त हुए बिना देश मजबूत नहीं हो सकता। कुल मिलाकर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महिला सशक्तीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। यह योजना आर्थिक दृष्टि से महिलाओं को मजबूत करेगी और इससे समाज में सकारात्मक संदेश जाएगा।



श्री हरिश कुमार बघेल
लेखाकार

कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन : भगवत गीता

अर्थात् कर्म करो और फल की चिंता मत करो । हालांकि यह अर्थ सामान्य तौर पर इस श्लोक का निकाला जाता है परंतु मेरी थोड़ी बहुत जानकारी इस श्लोक को कुछ इस प्रकार स्पष्ट कर पाती है कि “कर्म पर हमारा अधिकार है कदाचित फल पर नहीं” । अतः हमें केवल कर्म पर ध्यान देना चाहिए परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें फल का विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि फल का विचार ही तो कर्म को प्रोत्साहित करता है, भला कौन जीव है जो बिना फल की इच्छा के कर्म में अपना समय निवेश करेगा लेकिन हां एक बार यदि कार्य पूरा हुआ तो फल हमारे हाथ में नहीं है, इसे हमें ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए । विक्टर ह्यूगो नामक फ्रांसीसी लेखक ने इसी विषय पर कहा है कि “जीवन में आने वाले बड़े दुखों के लिए साहस रखो और छोटे दुखों के लिए धैर्य रखो एवं जब तुमने अपना दैनिक कार्य श्रम पूर्वक पूरा कर लिया है तो शांति से जाओ, ईश्वर जाग रहा है अर्थात् तुम्हारे कर्मों के फल की चिंता उसे है । वास्तव में जब भी कर्म शब्द आता है मन की अनंत गति विभिन्न दिशाओं में गमन करती हुई भिन्न-भिन्न विषयों पर विचार करने को विवश कर देती है । सोशल मिडिया के समय में विभिन्न माध्यमों से कर्म और इससे संबंधित अनेक विचार, कथन आदि सुनने-पढ़ने में आते हैं और कई प्रकार के उदाहरण देखने को मिलते हैं जो कई प्रकार के द्वंद्व उत्पन्न करते हैं जैसे -

क्या वास्तव में कर्म को निष्ठापूर्वक सदैव पूरा करना जरूरी है ?

कर्म के बाद फल को प्रभावित करने की संभावना यदि हो तो क्या किया जाना चाहिए ?

यदि दूसरे फल को प्रभावित करें तो स्वयं से न्याय की आशा कैसे की जाए ?

अकर्म, कर्म और विकर्म में चुनाव कैसे किया जाए कि क्या सही है और क्या गलत है ?

विकर्म से दूसरों की होने वाली तेज प्रगति से स्वयं पर आने वाले नकारात्मक प्रभाव से कैसे बचाव हो ?

कर्म से प्राप्त फल के बाद अर्जित हो सकने वाले साधारण या विलासिता पूर्ण जीवन में से किसका चुनाव किया जाए ?

इस प्रकार के कई विचारों में संभवतः सभी का मन उलझता होगा और विचार मंथन के अंत में व्यक्ति अपने प्रकृति के अनुसार किसी अच्छे / बुरे या कर्म विकर्म जैसे किसी एक के चुनाव की

ओर जाकर रूकता होगा । किसी एक निर्णय पर पहुंचना बाद की बात है लेकिन कम से कम विचार आना तो आवश्यक है क्योंकि यदि सही या गलत कर्म का विचार ही न आया और केवल स्वार्थ सिद्धि ही परम रही तो यह तो फिर पशुता की निशानी है ।

यहाँ पर अकर्म, कर्म और विकर्म पर प्रकाश डालना आवश्यक है । गीतानुसार, यदि मनुष्य कर्म और उसके फल दोनों में आसक्ति ना रखें और सदैव संतुष्ट रहे तथा सदैव वह परोपकार के उद्देश्य से कर्म करें तो यह अकर्म की श्रेणी में आता है । इसे आगे फल की इच्छा से जो कार्य होता है और कर्म के अनुसार फल भी भोगना पड़ता है, तो वह कार्य कर्म की श्रेणी में आता है, और यदि आवश्यक कर्म की सीमा समाप्त होने के बाद भी यदि गैरजरूरी फल की लालसा में कार्य हो तो यह फिर विकर्म की श्रेणी में आने लगता है, इस वर्ग में हम सही गलत के विषय में अपनी मर्यादा भूलने लगते हैं ।

अब कई बार कर्म किया ही क्यों जाए यह प्रश्न सामने आता है । पहले तो यह कि अकर्म का स्तर तो सामान्यतः जिम्मेदारियां न होने पर या उनसे मुक्त हो जाने पर पाया जा सकता है परंतु हम सभी को कर्म तो करना ही पड़ता है और यही कर्म करते हुए फल की प्राप्ति की लालसा में हम विकर्म करने लगते हैं तब हम कर्तव्य को अपने अनुसार परिभाषित करने लगते हैं, हर समय हमारे अंदर कर्म और विकर्म में से एक को चुनने का द्वंद्व चलता रहता है और हम धीरे-धीरे निश्चय के पैमाने पर विकर्म की ओर बढ़ते जाते हैं । विकर्म की ओर बढ़ने के कई कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण है विकर्म करने वालों की प्रगति, विशेषतः आर्थिक प्रगति । सामान्यतः यह देखा जाता है कि कर्म से तो मनुष्य संघर्ष के साथ प्रगति करता है परंतु विकर्म से अत्यधिक तेज प्रगति होती है और यह उन लोगों की विलासिता की बढ़ती चमक से भी दिखाई देती है । भौतिकवादी सुख की लालसा में हम भी इस ओर आकर्षित होकर चलने लगते हैं ।

इसके अलावा व्यवहारिक जीवन में और भी कई द्वंद, कर्मों को लेकर उत्पन्न होते हैं उनमें से एक बड़ा द्वंद है दो तरह के लोगों को लेकर । उदाहरण के तौर पर हम अपने कार्य स्थलों पर समान पद / वेतन के प्राप्तकर्ता पाएंगे जिनमें विभिन्न जिम्मेदारियां विभाजित हैं । कुछ पर अत्यधिक भार है तो कुछ पर नगण्य । कुछ पूरी निष्ठा से कार्य कर रहे हैं तो कुछ अत्यंत लापरवाही से । कुछ समाज को बहुत कुछ दे रहे हैं तो कुछ बिल्कुल नहीं । ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति लापरवाही / गैर जिम्मेदारी की ओर आकर्षित हो सकता है ।

एक और स्थिति द्वंद की तब बनती है जब हम कर्म को पूरा कर, फल को प्रभावित करने के अवसरों के बारे में विचार करते हैं । ऐसा निश्चित तौर पर किया भी जाता है और इससे उचित फल के हकदारों को उनका फल नहीं मिल पाता । प्रभावित कर सकने वालों के पक्ष में आने वाले परिणाम ही हमें भी यह करने को मजबूर करते हैं । हालांकि हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि फल को प्रभावित करना भी विकर्म का भाग है और यह कार्य हमारे संपूर्ण कर्म को विकर्म की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सकते हैं । परंतु साथ ही एक स्वाभाविक डर हमें सताता है कि हमारे कर्म के साथ न्याय की क्या संभावना है और यह डर भी उन्हीं लोगों के कारण होता है जो कर्म फल को प्रभावित करते हैं ।

वास्तव में यह जो भी द्वंद है यह सारे कर्म के कारण नहीं बल्कि फल के कारण है । हम सदैव ही फल के लिए कार्य करते हैं । सभी कर्मों में आमतौर पर हमारा लक्ष्य उनसे अंत में मिलने वाले फल रूपी भौतिक संसाधनों पर होता है । जीवन में लाभ अर्जित करना हमारा ध्येय होता है और यह लाभ विशेषतः भौतिकवादी से प्रभावित होता है । हमारा मन सदैव विलासिता की चमक दमक से प्रभावित होता है और जब हमारे श्रम की सीमा हमें बंधनों का आभास कराती है तब हम अन्य वैकल्पिक मार्गों को अपनाते हैं ताकि बेहतर फल लगातार प्राप्त हो सके । वैकल्पिक मार्गों को प्राथमिकता देते हैं वैसे-वैसे हम प्रयासों के पैमाने पर विकर्मों की ओर लुढ़कते जाते हैं । फिर हमारे लिए सबसे अधिक मायने रखता है स्थितियाँ को अपने अनुसार अनुकूलित करना और इस प्रकार द्वंद में नकारात्मकता की विजय बढ़ने लगती है ।

अब जब इतनी उलझने है तो हमें क्या करना चाहिए ? क्या कर्म न करने या न्यूनतम कर्म करने का विकल्प हो तो उसे चुनना ठीक है ? एक बात तो है कि हम कितना भी कर्म कर ले परंतु हमारा कर्म फल, फलों के इस विशाल समुद्र में एक बूंद भर ही होगा, तो फिर अपने जीवन को जिम्मेदारियों में झोंकना कितना सही है ? इसी से संबंधित मेरे एक मित्र से हुई एक वार्तालाप का यहां साझा करना उचित समझता हूं । हम एक तीसरे मित्र के महाविद्यालय के प्राध्यापक के तौर पर चयनित होने की संभावना पर बात कर रहे थे, तभी मेरे मित्र ने इस नौकरी में आराम का उदाहरण देते हुए इसे बाकी नौकरियों से बेहतर बताया । यह सत्य है कि सरकारी महाविद्यालयों में सामान्यतः दैनिक पढ़ाई लिखाई बहुत कम ही होती है और प्राध्यापकों के लिए यह अत्यंत आरामदायक नौकरी है लेकिन मुझे ख्याल आया कि क्या वह जिम्मेदारी आराम करने हेतु दी गई है ? क्या हम दिन में 6-7 घंटे भी कोई कार्य जिम्मेदारी से नहीं करें ? क्या इस दौरान किया गया अन्य गैर जरूरी कार्य हमारे कर्म को विकर्म में नहीं बदलता ? क्या हम चंद घंटे भी अपनी ओर से हमारे कार्य को समर्पित नहीं कर सकते और वह भी तब जब वह हमारी आजीविका का साधन हो ?

इस पर मुझे गीतोपदेश का एक कथन याद आता है जिसमें श्री कृष्ण कहते हैं कि कुछ तो हम करेंगे ही, कर्म नहीं करेंगे तो अन्य कार्यों में समय गुजारेंगे तब तो कर्म का न किया जाने से बेहतर है किया जाना । हम जब कर्तव्य के अलावा कुछ और करेंगे तो वह विकर्म ही होगा । अन्य विषय के मन में अतिक्रमण से हमारी सकारात्मक सोचने की शक्ति का हास होता है । हमारे विचार नदी की तरह हैं जो केवल बहना जानती हैं और जिसे दिशा का ज्ञान नहीं होता । इसी बहाव में हम कई बार कर्तव्य विमुख होकर अपनी सीमाएं तक लांघ जाते हैं ।

हमारे धर्म ग्रंथ हमें सदैव सत्कर्म की शिक्षा देते हैं चाहे वह स्वर्ग नरक के भोगों के संदर्भ के माध्यम से हो या जैसी करनी वैसी भरनी के रूप में, इसी जीवन में प्राप्त होने वाले कर्म फल के माध्यम से । हमें कर्म फल के रूप में यदि विलासिता या अधिकार से ज्यादा सफलता मिलती भी है तो यह हमारे मन को कभी संतुष्ट नहीं करती और हमारी चाह बढ़ती ही जाती है । प्रत्येक द्वंद में यदि अनुचित, उचित पर विजय प्राप्त होने लगे तो भी जीवन के अंत में हम अपने आप को अपूर्ण और जरूरतमंद ही महसूस करेंगे । क्योंकि अनुचित तो एक मोह के समान है जिसका कभी अंत नहीं होता ।

चूंकि जीवन एक ही मिलता है और इसमें यदि हम प्रयोग करने लगे तो हर व्यक्ति का पूरा जीवन चलेगा । अतः अनुभवों से सीखना ही बेहतर विकल्प है, जिससे हम इस एकमात्र जीवन को सही दिशा दे सके । मन को नदी न बनने देकर सागर की तरह स्थिर बना लेने पर शायद हम द्वंद्वों के समय उचित विकल्प का चुनाव कर सकते हैं । हम द्वंद्वों में कर्म या अकर्म की ओर झुकते हुए कुछ स्तरों को पार करने के बाद आसानी से सही निर्णयों को लगातार चुनने की स्थिति में आ सकेंगे । कर्म के बिना तो जीवन संभव नहीं है लेकिन विकर्मों में उलझ कर इसे बर्बाद करने से बचना भी एक प्रकार का कर्म ही है । द्वंद्वों से मुक्ति हमें कभी नहीं मिलेगी जीवन में हर निर्णय से पहले विकल्पों से गुजरना होता है और यही विकल्प, द्वंद्व पैदा करते हैं लेकिन उचित का चुनाव करना ही जीवन को सार्थक बनाता है । द्वंद्वों से मुक्ति एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है ना की कोई अंतिम स्थान और इसी लिए द्वंद्व भी जीवन का एक अभिन्न अंग है ।



श्री जय टिंडवानी
लेखाकार



इंटरनेट - आज की आवश्यकता

के दशक के अन्त में, एक वैश्विक वाइड-एरिया- नेटवर्क अमेरिका द्वारा बनाया गया था । 1960 अब इंटरनेट के रूप में जाना जाता है । इसी नेटवर्क के माध्यम से असंख्य कंप्यूटर सिस्टम एक ही नेटवर्क के जुड़े हैं । व्यवसाय चलाने से लेकर वित्तीय लेनदेन, सरकार द्वारा संचालित कार्यालयों तक इंटरनेट जो सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक है, ने आधुनिक जीवन को बिल्कुल आसान और सरल बना दिया है । हमारे भारत देश में इंटरनेट 1980 के दशक में आया था ।

यह आसान पहुँच और वैश्विक पहुँच के कारण ही हम लागत प्रभावी और समय बचाने के तरीके में विभिन्न प्लेटफॉर्मों के माध्यम से दुनियाभर के लोगों के साथ संवाद करने में सक्षम हैं । केवल इंटरनेट का प्रयोग संवाद करने में ही नहीं बल्कि बिजली, पानी और टेलीफोन के बिल का भुगतान घर बैठे बिना किसी परेशानी से और बिना लम्बी कतारों में खड़े हुए किया जा सकता है । इंटरनेट के माध्यम से हम घर बैठे रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिजर्वेशन,

ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन पढ़ाई, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी की खोज आदि सुविधाएँ मिल जाती हैं ।

इंटरनेट एक वर्ल्ड वाइड वेब है, जिसकी सहायता से हम दुनिया के किसी भी कोने में अपना मेल या जरूरी दस्तावेज को गोपनीयता के साथ पलक झपकते ही भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं । इंटरनेट मनोरंजन का एक बहुत अच्छा माध्यम है इसकी सहायता से संगीत, गेम्स, चलचित्र आदि को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के डाउनलोड कर सकते हैं ।

इंटरनेट एक दो धारी तलवार है । इसके कई फायदे हैं तो कई नुकसान भी हैं । इसके माध्यम से हिंसक और अश्लील छवियों तक आसान पहुँच भी अपराधों को जन्म दिया है । इसे एक प्रमुख व्यसन और व्याकुलता के कारण के रूप में भी देखा जाता है । विशेष रूप से किशोरों में यह नहीं मानसिक परेशानी का कारण बनता है बल्कि शारीरिक बीमारियों को भी जन्म देता है । वर्तमान समय में तो आनलाईन धोखाधड़ी के किस्से रोजाना समाचार पत्र में दिखायी देते हैं ।

इसके बचाव के लिए उचित सावधानियाँ जैसे सुरक्षित ब्राउजिंग का अभ्यास करना, साझा किये जाने वाले डेटा के साथ सतर्क रहना, बार बार पासवर्ड बदलना, ओ.टी.पी. साझा करने से बचना, गोपनीयता सेटिंग को समय समय पर अपडेट करना आदि करने से इंटरनेट के उपयोग में मदद मिल सकती है और इससे बचा जा सकता है ।



श्री रंजीत वर्मा
लेखाकार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा चैट जीपीटी

क्या आपने यूट्यूब या इंस्टाग्राम जैसी अन्य सोशल मीडिया एप्स पर स्क्राल करते हुये कभी ये सोचा है कि अगला शॉर्ट्स या रील कैसे आपका पसंदीदा ही होता है और आप कैसे अपनी दिनचर्या के कई घंटे इन एप्स पर व्यतीत कर देते हैं। इसका सरलतम उत्तर है - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या कृत्रिम बुद्धिमत्ता। वर्तमान समय में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति रह गया है जिसने इस प्रौद्योगिकी का नाम न सुना हो या इससे अप्रभावित रहा हो।

समाचारों में सुर्खियां बटोरने वाला ये शब्द आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मूलतः कृत्रिम रूप से विकसित बुद्धिमत्ता को इंगित करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से आशय प्रौद्योगिकी की उस शाखा से है जिसके अंतर्गत कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित मशीनों की सहायता से ऐसे कार्यों का निष्पादन किया जाता है जिसमें मनुष्यों की उच्चतर बौद्धिक क्षमता, तर्क-शक्ति एवं विवेक का प्रयोग हो। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर शोध पूर्णतः इस अवधारणा पर आधारित है कि मानवीय मस्तिष्क एक प्रतिक्रिया प्रणाली की सहायता से काम करता है तथा इसकी नकल करके ऐसी मशीन बनाई जा सकता है जो इन्सानों की तरह ही नहीं बल्कि उनकी अपेक्षा और भी बेहतर तरीके से उन कार्यों को कर सकती है। यूं तो 1950 के दशक से ही इस अवधारणा पर वैज्ञानिकों ने शोध करना शुरू कर दिया था। ए.आई. के क्षेत्र में विकास करने के लिए 1956 में वैज्ञानिक ने एक सम्मेलन 'द डार्टमथ समर रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के आयोजन में रुचि रखते थे। इस सम्मेलन का मकसद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में रुचि रखने वाले लोगों की प्रतिभा और विशेषता को आकर्षित करना था ताकि वह इस काम में मैककार्थी की मदद कर सके। बाद के वर्षों में आई रिसर्च सेंटर का गठन कारनेज मेलोन विश्वविद्यालय के साथ-साथ मैसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलजी में हुआ। इसके साथ ही ए.आई. को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पहली चुनौती जो उनके सामने थी वह एक ऐसे सिस्टम का निर्माण करना था जो बहुत कम खोज करके बहुत कम समय में किसी समस्या को कुशलता से हल कर सके। परंतु ध्यातव्य सफलता तब प्राप्त हुई जब 1958 में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक माने जाने वाले अमरीकी वैज्ञानिक जॉन मैककार्थी द्वारा प्रयुक्त आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में प्रयुक्त होने वाली लिस्प भाषा की यह विशेषता थी कि इसकी मदद से ऐसे साफ्टवेयर्स का विकास किया जा सकता था जो स्वतः ही अपनी खामियों का सुधार कर सकती

आगामी प्रश्न यह उठता है की आखिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में रोबॉट्स या मशीनें कार्य कैसे करती हैं। इनके कार्य निष्पादन के पीछे सबसे प्रमुख भूमिका 'डाटा सेट' अदा करती है। डाटा सेट से तात्पर्य है सूचनाओं का असीम भंडार। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीन हमारे आसपास घटने वाली हर मानवीय गतिविधियों का अवलोकन करता है और उन सूचनाओं को एकत्रित करती है ताकि उचित अवस्था का संसूचन करके इन सूचनाओं का तार्किक प्रसंस्करण कर काम किया जा सके। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अध्ययन दो मुख्य वर्गों में विभाजित करके किया जा सकता है। प्रथम वर्ग - वीक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कमजोर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), जैसे की अमेजन अलेक्सा, एपल सिरी इत्यादि तथा द्वितीय वर्ग - स्ट्रॉंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (मजबूत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) जिसके तहत स्वचालित गाड़ियों में प्रयुक्त तकनीकी आती है। मजबूत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी - यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी का एक ऐसा प्रकार है, जिसके अंतर्गत कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी समर्थित मशीन, वे सभी कार्य करने में सक्षम हो जाती हैं, जो एक मानव कर सकने में सक्षम होता है। यानी इस मशीन के द्वारा निष्पादन किए जाने के दौरान बीच-बीच में पर्याप्त मानवीय हस्तक्षेप भी आवश्यक होता है। मशीनों के संचालन में उपयोग की जाने वाली ऐसी प्रौद्योगिकी को 'कमजोर कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी' के नाम से जाना जाता है। ए.आई. के विकास से हम भविष्य में एक दिन ऐसे समय में पहुंच सकते हैं जब हम इसी की मदद से अपने रोजमर्रा के काम आराम से कर सकेंगे। हो सकता है ए.आई. एक समय में इतना सफल हो कि आपको शेयर मार्केट में कहां इनवेस्ट करना चाहिए, इसकी भी सटीक सलाह दे पाए। फोटो एडिटिंग की दुनिया में ए.आई. बहुत तेजी से फैल रहा है। फोटोशॉप ने भी एआई का इस्तेमाल करते हुए जेनेरेटिव फिल नाम का टूल तैयार किया है, जिसके नतीजे बेहद आश्चर्यजनक हैं। आपको अब यहां फोटो एडिट करते समय महारथी होने की जरूरत नहीं है, बल्कि जेनेरेटिव फिल की मदद से कोई भी शानदार फोटो की एडिटिंग कर सकते हैं। कुछ ए.आई. टूल ऐसे हैं जो आपको किसी गाने में से उसके बोल और उसका म्यूजिक अलग करके दे सकते हैं, जो कि एडिटिंग सॉफ्टवेयर में करना बहुत मुश्किल हो तो और ज्यादातर समय तो नामुमकिन होता है।

आज के समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनुप्रयोगों में शामिल हैं कम्प्यूटर गेमिंग, दृष्टि प्रणाली (विजन टैक्नीक), स्पीच रेकोग्निशन (वाक पहचान), इंटेलिजेंट रोबोट सिस्टम इत्यादि। इन सब में उल्लेखनीय है ओपेन ए.आई. नामक कंपनी द्वारा विकसित चैट जीपीटी सॉफ्टवेयर, जो पिछले कई दिनों से काफी चर्चा का विषय बना हुआ है। इसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उत्कृष्ट प्रयोग बताया जा रहा है। इसकी शुरुवात 2015 में की गई थी। चैट जीपीटी को शुरू करने में सैम आल्टमन और एलोन मस्क अहम भूमिका में थे। चूंकि चैट जीपीटी के शुरुवात होने के बाद यह अपना प्रभाव पूर्ण काम न करने के वजह से यह प्रोजेक्ट लाभप्रद नहीं हुआ।

तत्पश्चात माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा चैट जीपीटी में निवेश किया गया तथा इसके इसी सिस्टम पर अपना शोध कर के अपना प्रोटोटाइप लांच किया। 30 नवंबर को प्रोटोटाइप को लॉन्च करने के बाद चैट जीपीटी के यूजर्स काफी संख्या में बढ़ रहे हैं। अब तो ऐसा माना जा रहा है कि यह गूगल के एआई सिस्टम को काफी बड़ा टक्कर देने वाला है। चैट जीपीटी एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बॉट है जिसका अर्थ चैट जेनरेटिव प्री-ट्रेंड ट्रांसफार्मर है जो कि गूगल की तरह ही एक सर्च इंजन है। चैट जीपीटी पूर्णतः एआई सिस्टम पर काम करता है, अर्थात् आपके द्वारा पूछे गए प्रश्नों को यह तुरंत टाइप कर आपके सामने प्रस्तुत कर देगा। इसके लिए आपको किसी दूसरे वेबसाइट या ब्लॉग का सहारा नहीं लेना पड़ेगा। आप अपने द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर को बार-बार रीजेनरेट कर के संतोषजनक उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। इसकी सहायता से कई दैनंदिनी कार्यों जैसे कि स्कूल-होमवर्क, ई-मेल का स्वतः उत्तर देना, किसी दिये गए विषय पर गद्यांश लिखना, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा जनित कार्टून बनाना, इमेज एडिटिंग, विडियो एडिटिंग, सोशल मीडिया पोस्ट और प्रोफाइल प्रबंधन, इसके माध्यम से किसी भी तरीके के प्रश्नों जैसे कि चैट मैथ्स, रिज्यूम कवर लेटर, बायोग्राफी, छुट्टी के एप्लीकेशन को ऑटो जेनरेट करना इत्यादि को सरलता से काफी कम समय में बटन के एक क्लिक के द्वारा ही किया जा सकता है।

विशेषज्ञों द्वारा ये प्रयास लगाया जा रहा है कि यह गूगल तथा माइक्रोसॉफ्ट बिग जैसे सर्च इंजिन्स का स्थान ले सकती है। भारत में एआई के विकास की अपार संभावनाएं हैं और इसका लगातार इस्तेमाल भी हो रहा है। देश में ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां ए.आई. का

कारगर इस्तेमाल किया जा सकता है।

सरकार ने भी इस दिशा में कई कदम बढ़ाए हैं। सरकार ने उद्योग जगत से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल के लिए एक मॉडल बनाने से सहयोग की अपील भी की है। उद्योग जगत का भी इसमें काफी रूझान है। अब इस दिशा में एक प्राधिकरण के गठन की मांग भी की गई है जो इसके नियम-कायदे तय करें और पूरे क्षेत्र की निगरानी करें। सरकार ने घोषणा की कि 'ए.आई. इन इंडिया' और 'मेक ए.आई. वर्क फॉर इंडिया' के उद्देश्य को साकार करने में मदद करने के लिए, देश भर के शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए तीन उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

ए.आई. के विकास से इस क्षेत्र में रोजगार के अनेक अवसर पैदा हुये हैं। ए.आई. तकनीक जितनी रोचक है इसका अध्ययन भी उतना ही दिलचस्प है। एआई के फील्ड में अपना करियर बनाने हेतु कुछ बेसिक प्रोग्रामिंग लैंग्वेज, गणित और सांख्यिकी में महारत हासिल करना होगा। एआई के इस्तेमाल करने के लिए बहुत सी लैंग्वेज और टूल भी सीखना जरूरी हैं तथा पाइथन, टैंसरफ्लो इत्यादि जैसी भाषाओं के बारे में जानकारी की आवश्यकता होती है।

यूं तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की असंख्य संभावनाएं देखी जा रही हैं इस बात में कोई दो राय नहीं है कि भविष्य में यह तकनीक मानवजाति को व्यापक पैमाने पर प्रभावित करने वाली है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शोधकर्ता इसके अच्छे और बुरे परिणामों को लेकर समय-समय पर विचार विमर्श कर रहे हैं। एक ओर जहां ओपेन ए.आई. के संस्थापक सैम आल्टमन स्वयं विभिन्न देशों का भ्रमण कर सभी को इसके सदुपयोग के लिए जागरूक कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर टेसला कंपनी के एलोन मस्क इसके विपक्ष में यह बताते हैं कि यह तकनीक आगे चल कर न्यूक्लियर वार से भी ज्यादा घातक सिद्ध होगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी जीवन शैली को सरल बना तो रही है परंतु यह चिंता का विषय भी बनते जा रही है कि इसके दुरुपयोग से ऐसी भी मशीनों का निर्माण किया जा सकता है जो मानवजाति के लिए विषम परिस्थितियों को जन्म दे। मतिभ्रम (हेल्युसीनेशन), डीपफेक, डाटा प्राइवसी (डाटा गोपनीयता), कॉपीराइट संबंधी मुद्दे तथा साइबर सेक्युरिटी (साइबर सुरक्षा) कुछ ऐसे पहलू हैं जिनकी सुरक्षा पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न बन

चंद्रयान - 3

डीपफेक द्वारा बनाए गए न्यूज क्लिप्स तथा फेसमोर्फ जैसे ए.आई तकनीकों का उपयोग करके असामाजिक तत्वों द्वारा समाज से असमानताएं पैदा की जा रही है जिसके परिणामस्वरूप आए-दिन हिंसक दंगे व अनैतिक गतिविधियां बढ़ रही हैं। साथ ही साथ एआई के उपयोग से डेटा गोपनीयता से संबंधित गंभीर चिंताएं उत्पन्न हुई हैं। जटिल एल्गोरिदम में विशाल मात्रा में डेटा की आवश्यकता होती है, जिसके कारण प्रायः आम लोगों के डिजिटल फुटप्रिंट को बिना उनकी जानकारी अथवा सूचना और सहमति के बेचा जाता है और इसका प्रयोग किया जाता है। उदाहरणतः कैम्ब्रिज एनालिटिका का मामला, जिसमें इस प्रकार के एल्गोरिदम और बड़े डेटा का प्रयोग वोटिंग में हेर-फेर करने हेतु किया गया था। वर्तमान में एआई बिजनेस मॉडल से उत्पन्न व्यक्तिगत और सामाजिक चिंताओं को चेतावनी के रूप में लेने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष के तौर पर यह जानना बहुत जरूरी है कि हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दुष्प्रभावों से कैसे बच सकते हैं। आवश्यकता है क्लीन डेटासेट के प्रयोग तथा डाटा प्राइवसी जैसे सिद्धांतों को मजबूत बनाने की। गूगल व फेसबुक जैसे अग्रसर तकनीकी कंपनियों का भी यह मानना है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कुप्रभाव से बचने के लिए सभी क्षेत्रों में उपाय तैयार करने हेतु सर्वप्रथम क्लीन डेटासेट कि जरूरत होगी, जिस दिशा में देश की सरकारों को समुचित कदम लेने होंगे। सरकार को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल के लिए नीतिगत प्राथमिकताएँ तय करनी होंगी ताकि उन क्षेत्रों में रणनीति बनाने में सहजता हो जो मानवता के लिए आवश्यक एवं लाभकारी है। अंततः एक जागरूक उपयोगकर्ता के नाते हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीक का नैतिकता के साथ उपयोग करें।



श्री लोकनाथ दत्ता
सहायक लेखा अधिकारी

चंद्रयान - 3 भारत का एक महत्वाकांक्षी चंद्र मिशन है। चाँद के बारे में हो रहे सभी वैज्ञानिक कार्य और भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में चंद्रयान 3 सबसे महत्वपूर्ण है। चंद्रयान 3 चाँद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने का भारत का दूसरा प्रयास है। यह मिशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO - Indian Space Reserach Organisation) द्वारा 14 जुलाई, 2023 को 2.35 आंध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा के स्पेस सेंटर से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया और करीब दो हफ्ते बाद, यानी कि करीब 5 अगस्त को चंद्रयान 3 चंद्रमा की कक्ष में प्रवेश करेगा।

चंद्रयान 3 के मिशन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग का प्रदर्शन करना, चंद्रमा पर रोवर के चलने का प्रदर्शन करना और इन-सीटू यानि चाँद की सतह पर ही वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना है। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, लैंडर में कई उन्नत प्रौद्योगिकीयाँ मौजूद हैं जैसे कि लेजर और आरएफ - आधारित अल्टीमीटर, वेलोसीमीटर, प्रोपल्शन सिस्टम आदि। ऐसी उन्नत तकनीकों को पृथ्वी की स्थितियों में सफलतापूर्वक प्रदर्शित करने के लिए, कई लैंडर विशेष परीक्षण, जैसे इंटीग्रेटेड कोल्ड टेस्ट, इंटीग्रेटेड हॉट टेस्ट और लैंडर लेग मैकेनिज्म प्रदर्शन परीक्षण की योजना बनाई गई है और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया है।

चंद्रयान 3 के माध्यम से भारत का लक्ष्य अपनी तकनीकी कौशल, वैज्ञानिक क्षमताओं और अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करना है। यदि चंद्रयान 3 सफल होता है, तो यह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में भारत की स्थिति को और मजबूत करेगा। यह मिशन युवा पीढ़ी को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा।



श्री बाळा नारायण परब
वरिष्ठ लेखाकार

यातायात के नियमों का पालन या चालान का डर ?

‘नागरिकों के जीवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की होती है’ ये वाक्य जितना महत्वपूर्ण है उतना ही हास्यपद भी लगता है। क्योंकि एक तरफ ये संवैधानिक जिम्मेदारी का बोध करवाता है वहीं दूसरी ओर ये नागरिकों के गैर जिम्मेदाराना रवैये का भी भान करवाता है। हम सब मिलकर सरकार बनाते हैं, सरकार हमारी सुरक्षा व्यवस्था के लिए नियम और कानून बनाती है। यही लोकतान्त्रिक व्यवस्था है, जो सभी नागरिकों के जीवन जीने के अधिकार और अन्य संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करती है। पर हम ये मानकर चलने लगते हैं कि हमारे अमूल्य वोट के बदले सरकार हमारे जीवन की सुरक्षा की गारंटी भी हमें देगी। इसी भावना के साथ हम निश्चिन्त होकर नियमों और कानूनों की अवहेलना करने लग जाते हैं। दैनिक जीवन में लगातार गलतियों का दोहरान होता जाता है और धीरे-धीरे यही हमारा स्वभाव बन जाता है। जनता बेखौफ होकर नियमों को तोड़ती है, कानूनों की अवहेलना करती है क्योंकि - ‘हमारे जीवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी तो सरकार की है’।

अब सरकार भी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए और जनता की मानसिकता को समझते हुए जहाँ कहीं भी नियमों और कानूनों की अवहेलना होती नजर आती है वहाँ पुलिस और प्रशासन को तैनात कर देती है और आदेश प्रसारित करती है कि वो जनता के जीवन को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी का पालन करें। ये सरकार और प्रशासन का नैतिक दायित्व है। बहुत अजीब लग रहा होगा आप सभी को यह लेख पढ़ते हुए पर वास्तविकता यही है जो समाज और जनता के व्यवहार में आमतौर पर देखी जाती है।

अपने जीवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी स्वयं की है ये तो हम कभी सोचते ही नहीं इसी लिए तो हम लोग हेलमेट यातायात के नियम का पालन करने के लिए नहीं बल्कि इस लिए बनाते हैं कि यातायात पुलिस चालान काट देगी और उसे ना चाहते हुए भी भरना पड़ेगा। हम यातायात के नियमों का पालन सिर्फ चालान से बचने के लिए करते हैं। स्वयं के जीवन को बचाने का जिम्मा हमारा थोड़ी है वो तो सरकार का है, क्योंकि हमने अमूल्य वोट जो दिया है।

कई बार देखा जाता है कि समाज के शिक्षित और जिम्मेदार नागरिक यातायात पुलिस को चकमा देकर चालान से बच जाते हैं और स्पीड से गाड़ी दौड़ाकर निकालने के चक्कर में अस्पतालों का चालान भर देते हैं। किस्मत अच्छी हो तो अस्पताल का चालान भर कर बच जाते हैं अन्यथा दूसरी दुनिया का टिकिट भी कटवा लेते हैं।

सबसे ज्यादा हैरत तो तब होती है जब यातायात के नियम तोड़कर निकलते वक्त यातायात पुलिस के पास पकड़े जाने पर अपनी पहचान और ओहदे का भरपूर उपयोग अपने को चालान से बचाने के लिए करते हुए देखा जाता है। यानि बड़े ओहदे वाले या राजनीतिक पहुँच रखने वाले नियमों के तोड़ने के बाद भी चालान नहीं भरते, वे आसानी से छूट जाते हैं और समाज को सन्देश देते हैं कि ‘जिसकी लाठी उसकी भैंस’। बड़ी विडम्बना ये है कि चालान भी वो ही भरते हैं जिनकी हैसियत नहीं होती, चालान भरने की हैसियत वाले तो कानून तोड़कर मुफ्त में ही छूट जाते हैं और अपने आप को तीसमार खाँ समझते हैं।

‘सड़क सुरक्षा सप्ताह’ और ‘यातायात सुरक्षा पखवाड़ा’ जैसे जागरूकता अभियान का प्रभाव भी सिर्फ कुछ दिनों तक ही दिखाई देता है। कभी-कभी तो लगता है पुलिस और प्रशासन भी सिर्फ ड्यूटी पूरी करने की औपचारिकता पूर्ण करता है। कुछ समय के लिए तो ये सब देखकर बहुत सुकून महसूस होता है कि चलो चालान और सजा के डर से ही सही हम स्वयं के प्रति सजग और जागरूक तो होते हैं। काश ये सब हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाए ताकि अनमोल जीवन को सुरक्षित रखा जा सके। हालांकि जन्म और मृत्यु पर इंसान का बस नहीं चलता पर फिर भी हमारे अनुभवी पूर्वजों के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण सन्देश समाज को दिए हैं, यदि उनको अमल में लाया जाये तो बहुत सारी जिंदगियाँ बचाई जा सकती हैं। उनमें से एक बात अगर हमेशा याद रखें कि ‘सावधानी जीवन को खतरे से बचाती है’ तो बहुत सारे नुकसानों से बचा जा सकता है।

कुछ ध्येय वाक्यों को भी अपना गुरु बना लिया जाए तो बहुत हद तक जीवन को हानि से बचाया जा सकता है जैसे कि ‘कभी नहीं पहुँचने से अच्छा है देर से पहुँचना’ वर्तमान समय में हम बहुत भागमभाग और व्यस्तता के चलते लापरवाही में बहुत बड़े-बड़े नुकसान उठा लेते हैं और उसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। सड़क दुर्घटना में या अन्य किसी भी कारण से एक व्यक्ति का असमय चले जाना पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है।

अनुकरण से सीखने का सिद्धांत समाज स्वयं स्थापित करता है। हमारी आने वाली नस्लें वैसा ही करती हैं जैसा देखती हैं। वर्तमान पीढ़ी नियम तोड़ती है तो आने वाली पीढ़ियाँ भी यही सीखती हैं। अतः एक जिम्मेदार नागरिक होने का एहसास करके, नियम और कानूनों का दिल से सम्मान करें, चालान कट जाने के

डर से यातायात नियमों का पालन ना करें बल्कि इसलिए करें कि जीवन अमूल्य है और ये समाज और राष्ट्र का धरोहर है, इसे बचाने की जिम्मेदारी सरकार और प्रशासन की नहीं स्वयं की है।



श्री अजीत सिंह चौधरी
सहायक लेखा अधिकारी



विश्व का पहला गणतंत्र “वैशाली”

विश्व का पहला गणतंत्र माना जाने वाला “वैशाली” का नाम महाभारत काल के राजा विशाल के नाम पर रखा गया है। कहा जाता है कि उन्होंने यहां एक विशाल किला बनवाया था, जो अब खंडहर हो चुका है। वैशाली एक महान बौद्ध तीर्थस्थल है और भगवान महावीर की जन्मस्थली भी है।

महाभारत काल से ही वैशाली के इतिहास का पता चलता है। वैशाली में ही विश्व का सबसे पहला गणतंत्र यानि “रिपब्लिक” कायम किया गया था। वैशाली के कई संदर्भ जैन धर्म और बौद्ध धर्म से संबंधित ग्रंथों में पाए जाते हैं, जिसमें वैशाली और अन्य महाजनपदों के बारे में जिक्र है। इन ग्रंथों में मिली जानकारी के आधार पर वैशाली को गणराज्य के रूप में 6 वीं शताब्दी ई.पू. तक गौतम बुद्ध के जन्म से पहले 563 में स्थापित किया गया था, जिससे यह विश्व का पहला गणतंत्र बना। पिछले जैन “तीर्थाकर” भगवान महावीर के जन्मस्थान होने के नाते वैशाली को इतिहास में एक विशेष स्थान दिया गया था। बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने अपना आखिरी उपदेश दिया और इस पवित्र भूमि पर अपनी परिनिर्वाण (ज्ञान की प्राप्ति) की घोषणा की। यह अम्बपाली (आम्रपाली) की भूमि के रूप में भी प्रसिद्ध है, जो एक महान नृत्यांगना थी। यह माना जाता है कि जिले को राजा विशाल से अपना नाम मिला है। हालांकि इतिहास के अनुसार पाटलीपुत्र गंगा के मैदानी इलाकों में राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र था। वैशाली गंगा के केंद्र के रूप में अस्तित्व में आया। यह वाजजी गणराज्य की सीट थी। वैशाली को

प्रतिनिधियों की एक विधिवत चुने विधानसभा और कुशल प्रशासन के लिए विश्व का पहला गणराज्य होने का श्रेय दिया जाता है। 12.10.1972 की जिले को स्वतंत्र जिले का दर्जा प्राप्त हुआ, इससे पहले यह पुराने मुजफ्फरपुर जिले का हिस्सा था। हाजीपुर, वैशाली के जिला मुख्यालय का नाम हाजी इलियास शाह (1345 से 1358 ईस्वी) नामक बंगाल के राजा के नाम पर रखा गया था, जिसने इसे स्थापित किया था। उन्होंने हाजीपुर में एक किला बनाया जिसमें मस्जिद के साथ जामी मस्जिद नामक एक इमारत थी जिसे 84.5 फुट (25.8 मीटर) लंबा और 33.5 फीट (10.2 मीटर) चौड़ा जिसे प्राचीन काल में उक्ककाला कहा जाता था।

वैशाली का दूसरा नाम वैशाली गंगा घाटी का नगर है, जो आज के बिहार एवं बंगाल प्रान्त के बीच सुशोभित है। इस नगर का एक दूसरा नाम “विशाल” भी था। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार वैशाली में ही विश्व का सबसे पहला गणतंत्र यानि “रिपब्लिक” कायम किया गया था। भगवान महावीर की जन्म स्थली होने के कारण जैन धर्म के मतावलम्बियों के लिए वैशाली एक पवित्र स्थान है। भगवान बुद्ध का इस धरती पर तीन बार आगमन हुआ यह उनकी कर्म भूमि भी थी।

वैशाली एक महान बौद्ध तीर्थ है और भगवान महावीर के जन्मस्थान भी है। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने तीन बार इस जगह का दौरा किया और यहां काफी समय बिताया। बुद्ध ने वैशाली में अपना आखिरी प्रवचन भी दिया और अपने निर्वाण की घोषणा की। उनकी मृत्यु के बाद वैशाली ने दूसरी बौद्ध परिषद भी आयोजित की।

वैशाली दिवस / महोत्सव जैन तीर्थकर, भगवान महावीर की जयंती ‘वैसाख’ (मध्य अप्रैल) के महीने के पूर्णिमा के दिन मनाने के लिए आयोजित किया जाता है।

इसकी शुरुवात भारत के बिहार राज्य के वैशाली से हुई थी जिसे वैशाली गणराज्य के नाम से जाना जाता था। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार ईसा से लगभग छठी सदी पहले वैशाली में ही दुनिया का पहला गणतंत्र यानी ‘गणराज्य’ कायम हुआ था। आज जो लोकतांत्रिक देशों में अपर हाऊस और लोअर हाऊस प्रणाली है, जहां सांसद जनता के लिए नीतियां बनाते हैं।



श्री विकास कुमार
लेखाकार

मासूम की अमीरी

नित्य की तरह कल भी मैं कार्यालय के लिए निकलने को तैयार हुआ था। मेरी घड़ी में 8:05 बज रहा था और कार्यालय में दिन की शुरुआत करने संबंधी भूमिका मन में बनने लगी थी। तिलक नगर स्टेशन तक पहुंचने के लिए अपने फ्लैट से मुझे लगभग 10 मिनट चलकर जाना होता था। रास्ते में मैं मन ही मन अपनी दिनभर की प्राथमिकताएं तय करता हुआ स्टेशन पर पहुंचा और लगभग 01 मिनट के इंतजार के बाद 8:19 की चेंबूर से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस को जाने वाली लोकल आ गई। जब मैं लोकल में चढ़ा तो नित्य की तरह ही मुझे गिनी चुनी खाली सीटें दिखाई दी। चेंबूर से ही चलने के कारण सामान्यतः इस लोकल में जगह मिल जाया करती है। उन्हीं में से एक सीट पर मैं बैठ गया। अगले 35 मिनट की यात्रा पूरी करने के लिए मैंने जेब से मोबाइल निकाला ताकि कुछ समाचार, व्हाट्सएप, टेलीग्राम और मेल बॉक्स पर नजर मार लूं और तभी मेरी नजर अपने मोबाइल की न्यूनतम बैटरी के नोटिफिकेशन पर पड़ी। शायद सुबह चार्जर की पिन लगाकर बटन चालू करना भूल गया था। अब केवल व्हाट्सएप पर जरूरी संदेश देखकर मोबाइल रखने का निर्णय किया और सोचा कार्यालय पहुंचकर सबसे पहले चार्जर का जुगाड़ करना पड़ेगा।

अब चूंकि हाथ खाली थे तो दिमाग भी कुछ और कर सकने के लिए उपलब्ध था। तभी मेरा ध्यान मेरी और सामने वाली सीट पर बैठे यात्रियों पर गया। छः यात्रियों की सीटों पर मेरे अलावा एक ताऊ बैठे थे जो मराठी समाचार पत्र को पढ़ने में लिप्त थे, दो अन्य युवा, संभवतः मेरी ही तरह अपने कार्यालय तक की यात्रा तय कर रहे थे और उनके हाथों में अपने-अपने मोबाइल थे। मोबाइल के दौर से पहले लोग समाचार पत्र और किताबों को प्राथमिकता देते थे। वाद-विवाद का विषय हो सकता है, लेकिन कई अनुभवों से यह निष्कर्ष निकलता है कि समाचार पत्र और किताबें माध्यम के तौर पर बेहतर थी और जब यह भी नहीं होता तब लोग आपस में बातें करते जिनमें कई विषयों के माध्यम से उन्हें अनुभव मिलते। यह व्यवहारिक जीवन में सबसे आवश्यक और समय के उपयोग का सबसे बेहतर माध्यम होता है। खैर आजकल तो सबके हाथ में अपनी डिजिटल दुनिया है।

तिलकनगर से ट्रेन चलने के बाद जीटीबी नगर स्टेशन निकल चुका था। तभी मेरे पड़ोस की खिड़की वाली सीट और उसके सामने वाली सीट पर बैठे युवा दम्पति में हलचल शुरू हुई। मेरे पास बैठे पुरुष ने सामने बैठी अपनी पत्नी को इशारा करते हुए उठने को कहा। उसने भी अपने बैग उतारा और दोनों अगले स्टेशन पर उतरने की तैयारी में बाहर निकल कर दरवाजे की ओर चल पड़े। दोनों के बीच चल रही थी उनकी प्यारी सी बेटी जिसकी उम्र लगभग 7-8 साल होगी। परिवार दिखने में आर्थिक रूप से सक्षम लग रहा था। सभी नए कपड़े पहने हुए, आवश्यक साज श्रृंगार से युक्त थे, संभवतः किसी सामाजिक / पारिवारिक कार्यक्रम में हिस्सा लेने जा रहे थे। उनके बाहर निकलते ही मैं खिड़की की ओर सरक गया परंतु ज्यादा यात्री ना होने से मेरे सामनेवाली सीट खाली ही रही जिससे मुझे दरवाजे तक पहुंच चुके दंपति और उनकी बेटी खड़े हुए दिखाई दे रहे थे। तभी ट्रेन धीमी होकर रूक जाती है। कई बार वडाला रोड पर जंक्शन होने के कारण बांद्रा की ओर से आने वाली ट्रेनों के चलते आउटर पर कुछ ट्रेनों को रोकना पड़ता है और प्लेटफार्म खाली होते ही रूकी ट्रेनों को उन पर लाया जाता है।

इसी समय मेरी नजर बाहर पड़ी। स्टेशन के इस ओर के आउटर के दोनों ओर झुगगी झोपड़ियां हैं जिसमें कई परिवार रहते हैं। पटरी के काफी नजदीक काली बरसाती प्लास्टिक से ढकी हुई, छोटी-छोटी झोपड़ियां, चारों ओर कचरे के ढेर, गंदगी और उन्हीं के बीच पलती हुई ज़िंदगियां। वैसे तो यह दृश्य सभी यात्रियों के लिए रोज की बात थी परंतु आज मेरी नजर कुछ बच्चों पर पड़ी। वो बच्ची पटरी और झुगियों के बीच अचानक खेलती हुई रूक गई। उसकी नजर ट्रेन में अपने माता-पिता के साथ खड़ी इस बच्ची पर पड़ी। अपनी हम उम्र लड़की को देखकर वह स्तब्ध सी खड़ी हो गई। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। धूल में सने हुए, अपने नाप से बड़े कपड़े पहने, नीचे खड़ी हुई मासूम लड़की, मुंह में उंगली दबाए एक-टक सजी धजी लड़की को देख रही थी और शायद सोच रही थी कि क्यों -

क्यों उसके हाथ में सुंदर कंगन

मेरी कलाई खाली क्यों है ?

क्यों उसकी पास दमकते कपड़े और

मेरी कुर्ती मैली क्यों है ?

क्यों है उसके पैरों में जूतियां और
मेरे पंजे नग्न क्यों हैं ?

क्यों है उसे जरूरत पायलों की और
मेरे पैर सूने क्यों हैं ?

क्यों है उसके मुख पर लाली और
मेरे चेहरे पर धूल क्यों है ?

मेरे कान तो छिदे तक नहीं फिर
उसके कान में सुंदर बाली क्यों है ?

मेरे पास तो अपना कुछ भी नहीं
तो फिर उसके कंधे पर सुंदर पर्स क्यों है ?

हम तो इतने अक्षम तो फिर
वह परिवार इतना सक्षम क्यों है ?

उनकी शायद होती है हर कामना पूरी
हमारी सारी प्रार्थनाएँ अधूरी क्यों है ?

भीतर (चेतना) से हम सब जब है बराबर
तो बाहर से इतना अंतर क्यों है ?

तभी खेल से हटकर मौन खड़ी अपनी मित्र को देखकर उसके हम उम्र साथी ने आकर उसे बुलाया राधा ! चल खेलते है ! राधा ने अपने मित्र की ओर देखकर एक प्यारी सी मुस्कान उसे दी और उसी मासूमियत के साथ अपने खेल में मग्न हो गई जो उसके स्वरूप का हिस्सा थी । यह दृश्य देखकर एक मुस्कान ट्रेन में खड़ी बालिका के मुख पर भी आई । उसने राधा को खुश देखा और भीतर एक संतुष्टि महसूस की । वह संतुष्टि जो उसे दूसरे की खुशी से मिली थी । लगभग 18-20 सेकंड के विराम के बाद ट्रेन को हरा सिग्नल मिला और वडाला रोड की ओर ट्रेन चलने लगी । राधा अपने मित्रों में व्यस्त हो गई और हम सब उसे उसके हाल में ही छोड़कर चल पड़े । वडाला स्टेशन आते ही यात्री उतरने लगे तभी इस युवा दम्पति में से मां ने अपनी बेटी को सचेत करते हुए कहा ऋद्धिका ! बेटी धीरे से उतरना और मेरे कान पर यह शब्द पढ़ते ही मैं फिर विचार में पड़ गया ।

मुझे ख्याल आया कि ऋद्धिका तो राधा का ही पर्यायवाची है, एक नाम और दो विपरीत स्थितियों में जीवन ! जब नाम पर्यायवाची है तो इनके जीवन एक दुसरे का पर्याय क्यों नहीं । एक को तो मिलेगा बढ़िया पालन पोषण, उच्च शिक्षा, सम्मान भरी आजीविका का साधन, बढ़िया संगत आदि, वहीं दूसरी को पुराने

कपड़े, संघर्ष से पूर्ण रहन-सहन, केवल साक्षरता भर पढ़ाई, सरकारी अस्पतालों का इलाज, संभवतः उचित समय से पहले विवाह, आजीविका के ऐसे साधन जिसे शायद परिवार का उचित पालन पोषण भी ना हो, असुरक्षित जीवन आदि । मैं मानता हूं कि सबका जीवन स्तर समान नहीं हो सकता परंतु निचले तबके के सभी लोगों को न्यूनतम संसाधन तो मिलना ही चाहिए । समाजवाद, मिश्रित अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र जैसी अवधारणाएं दावा भी यही करती है, लेकिन दावों का सच काफी कड़वा है । स्वतंत्रता के पहले तो दोष क्रमशः राजाओं, मुगलों और अंग्रेजों पर मढ़ा गया परंतु बाद में भी तो 75 वर्ष गुजर चुके है और परिवर्तन कम ही दिखता है । समय-समय पर आने वाली कई मंत्रालयों की योजनाएं, ज़िम्मेदारों को और अधिक सक्षम बनाकर तथा जरूरतमंदों को उनके हाल पर छोड़कर समाप्त घोषित कर दी जाती है । देश की अर्थव्यवस्था भले ही ट्रिलियन डॉलर्स में मापी जा रही हो परंतु देश के धन का ज्यादातर हिस्सा चंद अमीरों को हाथों में है और करोड़ों लोग गरीबी के तले दबकर जीवन बस काट ही रहे हैं । अमीरी और गरीबी के बीच की खाई तो बढ़ ही रही है अमीरों के साथ-साथ गरीबों की संख्या भी बढ़ रही है । ये विषय सोचने के नहीं वरन परिवर्तन के प्रयास के हकदार ज्यादा है । वैसे इन राधाओ का बड़प्पन प्रशंसा के योग्य है । ऋद्धिकाओं के जीवन का स्वप्न संजोए अपनी मासूमियत भरी हंसी से अपनी अमीरी का आभास हमें कराती है परंतु साथ में आशा भी करती है कि उनका उत्थान करने के लिए जिम्मेदार, उनकी उंगली पकड़ेंगे और उन ज़िम्मेदारों में हम भी शामिल है ।



श्री अविनाश मान्दलिया
डी. ई. ओ.

भारतीय शिक्षा प्रणाली

भारतीय शिक्षा प्रणाली समय के साथ बदल गई है। हमारी शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव अंग्रेजों द्वारा देश के उपनिवेश के साथ आया। हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार और पुनर्गठन की आवश्यकता कई बार महसूस की गई है। हालांकि, अभी तक इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली विदेशी राष्ट्रों से काफी अलग है। पश्चिमी देशों में पाठ्यक्रम काफी हल्का और व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित माना जाता है, जबकि भारत में फोकस सैद्धांतिक ज्ञान और रट कर प्राप्त अंकों पर है।

छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे सारे अध्याय रटें और कक्षा में अच्छे ग्रेड लाएँ। भारतीय स्कूलों में अंकन प्रणाली प्राथमिक कक्षाओं से शुरू होती है, जिससे छोटे बच्चों पर बोझ पड़ता है। प्रतियोगिता दिन-ब-दिन बढ़ रही है। माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अपने साथियों से बेहतर प्रदर्शन करें और शिक्षक चाहते हैं कि उनका वर्ग अन्य कक्षाओं की तुलना में बेहतर करें।

प्रतियोगिता के आगे रहने के आग्रह से वे इतने अंधे हो जाते हैं कि उन्हें एहसास ही नहीं होता कि वे बच्चों को गलत दिशा में धकेल रहे हैं। एक ऐसी उम्र में जब छात्रों को अपनी रुचियों का पता लगे और अपने रचनात्मक पक्ष को सुधारने का मौका दिया जाना चाहिए, उन पर एक निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन करने के लिए दबाव डाला जाता है और अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए दिन-रात एक कर दिया जाता है।

छात्रों को गणित, भौतिक और अन्य विषयों की विभिन्न अवधारणाओं को समझने के बजाय, अध्याय सीखने पर पूरा ध्यान केन्द्रित करवाया जाता है। इस वजह से वे व्यावहारिक ज्ञान नहीं ले पाते और जिन्दगी में आगे अपने लिए फैसले लेने में अक्षम होते हैं और अपनी रुचि के अनुसार पेशा भी नहीं चुन पाते हैं। अतः भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार बहुत अनुचित है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास :

भारतीय शिक्षा प्रणाली पुरानी और सांसारिक कही जाती है। ऐसे समय में जब विश्व रचनात्मक और उत्साही व्यक्तियों की तलाश में हैं, भारतीय स्कूल युवा मन को किताबी ज्ञान से प्रशिक्षित कर रहे हैं जोकि उन्हें किताबी किड़ा बना रहा है तथा एक रचनात्मक व्यक्ति बनने से रोक रहा है।

सुझाव देने या विचारों को साझा करने की कोई स्वतंत्रता नहीं है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की गंभीर आवश्यकता है जो बदले में होशियार व्यक्तियों को विकसित करने में मदद कर सकती है।

रचनात्मक सोचने की जरूरत है :

अगर हम नए आविष्कार करना चाहते हैं, तो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और व्यक्तिगत स्तर पर समृद्धि लाने की जरूरत है। हालांकि, दुर्भाग्य से हमारे स्कूल हमें प्रशिक्षित करते हैं अन्यथा वे हमें एक निर्धारित अध्ययन कार्यक्रम से जोड़ते हैं और हमें समुदेशन पूरा करने और सैद्धांतिक सबक सीखने में इतना व्यस्त रखते हैं कि रचनात्मकता के लिए कोई जगह नहीं बची है।

रचनात्मक सोच के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना होगा। स्कूलों को उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो छात्र के दिमाग को चुनौती देते हैं, उनके विश्लेषात्मक कौशल को सुधारते हैं और उनकी रचनात्मक सोच क्षमता को बढ़ाते हैं। इससे उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी।

सर्व प्रकार विकास की आवश्यकता :

भारतीय शिक्षा प्रणाली का प्राथमिक केन्द्र बिन्दु शिक्षाविदों पर है। यहां भी अवधारणा को समझने और ज्ञान बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया है, बल्कि केवल अच्छे अंक प्राप्त करने के एकमात्र उद्देश्य के साथ या बिना समझे पाठों को रटने से पाठ्यक्रम से बाहर भले ही कुछ स्कूलों में गतिविधियां हों, लेकिन इन गतिविधियों के लिए प्रति सप्ताह एक कक्षा शायद ही होती है।

भारतीय विद्यालयों में शिक्षा केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित है यह एक बुद्धिमान और जिम्मेदार व्यक्ति को बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है। छात्रों के सर्व प्रकार के विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रणाली को बदला जाना चाहिए।

भारतीय शिक्षा प्रणाली को काफी हद तक त्रुटिपूर्ण कहा जाता है। यह युवा दिमाग का फायदे से ज्यादा नुकसान करता है। हालांकि, कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि यह छात्रों को एक अच्छा मंच देता है क्योंकि यह उनके दिमाग को चुनौती देता है और उनकी संतुष्टि को बढ़ाने की शक्ति पर ध्यान केंद्रित करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली अच्छी है या खराब इस पर बहस जारी है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के गुण और दोष :

सत्ता में बैठे लोग भारतीय शिक्षा प्रणाली में अच्छे और बुरे पर चर्चा करते हैं और सुधारों को लाने की आवश्यकता है या नहीं, यहाँ उसी के गुण और दोष में से कुछ इस प्रकार हैं।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के दोष :

भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई दोष हैं। यहाँ प्रणाली में मुख्य दोष में से कुछ पर इस प्रकार हैं :

व्यवहारिक ज्ञान का अभाव : भारतीय शिक्षा प्रणाली का केन्द्र बिन्दु सैद्धांतिक भाग पर है। शिक्षक कक्षाओं के दौरान पुस्तक से पढ़ाते हैं और अवधारणाओं को मौखिक रूप से समझाते हैं। छात्रों को सैद्धांतिक रूप से भी जटिल अवधारणाओं को समझने की उम्मीद है। अत्यधिक आवश्यक होने पर भी व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती है।

ग्रेड पर ध्यान : भारतीय स्कूल का ध्यान अच्छे ग्रेड पाने के लिए अध्यायों को रटने पर है। यह बात शिक्षक परेशान नहीं करते हैं कि छात्रों ने अवधारणा को समझा है या नहीं, वे सभी देखते हैं कि वे कितने अंक प्राप्त किए हैं।

सर्व प्रकार के विकास के लिए कोई महत्व नहीं : ध्यान केवल पढ़ाई पर है। छात्र के चरित्र या उसके शारीरिक स्वास्थ्य के निर्माण के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाता है। स्कूल अपने छात्रों के सर्व प्रकार के विकास में योगदान नहीं देते हैं।

ज्यादा पढ़ाई का बोझ : छात्रों पर पढ़ाई का बोझ है। वे स्कूल में लंबे समय तक अध्ययन करते हैं और उन्हें घर पर काम पूरा करने के लिए ढेर सारा गृहकार्य दिया जाता है। इसके अलावा नियमित कक्षा परीक्षा, प्रथम अवधि की परीक्षा, साप्ताहिक परीक्षा और मध्यावधि परीक्षा से युवा दिमाग पर बहुत दबाव पड़ता है।

भारतीय शिक्षा के गुण : भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक विशाल पाठ्यक्रम शामिल है और कुछ नाम रखने के लिए गणित, पर्यावरण विज्ञान, नैतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अंग्रेजी, हिंदी और कंप्यूटर विज्ञान सहित विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्रदान करता है। ये सभी विषय प्राथमिक कक्षाओं से ही पाठ्यक्रम का हिस्सा बनते हैं। इसलिए, छात्र कम उम्र से ही विभिन्न विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

अनुशासन को बढ़ाता है : भारत के स्कूल अपनी समय, टाईम टेबल, आचार संहिता, मार्किंग सिस्टम और स्टडी शेड्यूल के बारे में बहुत खास है। छात्रों को स्कूल द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करने की आवश्यकता होती है अन्यथा उन्हें दंडित किया जाता है। यह छात्रों में अनुशासन को बढ़ाने का एक अच्छा तरीका है।

समझने की शक्ति बढ़ाता है : भारत के स्कूलों में अंकन और रैंकिंग प्रणाली के कारण, छात्रों को अपने पाठ को अच्छी तरह से सीखना आवश्यक है। अच्छे अंक लाने और अपने सहपाठियों की तुलना में उच्च रैंक पाने के लिए उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता है। वे ध्यान केंद्रित करने और बेहतर समझ के लिए विभिन्न तरीकों की तलाश करते हैं। जो बच्चे नहीं देख पाते वे कई उपकरणों की पहचान करते हैं, जो उन्हें बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं वे अपनी शक्ति को बढ़ाने में सक्षम होते हैं, जो उनको जीवन भर मदद करता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की समय समय पर आलोचना होती रही है। हमारी युवा पीढ़ी के समुचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए इस प्रणाली को बदलने की जबरदस्त आवश्यकता है। सत्ता में बैठे लोगों को समझना चाहिए कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को गंभीर सुधारों की आवश्यकता है। प्रणाली को आध्यात्मिक, नैतिक, शारीरिक और मानसिक रूप से छात्रों को विकसित करने के लिए बदलना चाहिए।



श्री सचिन शंकरराव उमक
लेखाकार

संस्कृतियों से समृद्ध देश - भारत

भारत संस्कृतियों से समृद्ध देश है, जहां अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं। हम भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान और आदर करते हैं। संस्कृति सबकुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते हैं। कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत, त्योहार, मेले, संगीत और नृत्य आदि सभी संस्कृति का हिस्सा हैं। भारतीय संस्कृति विभिन्नता में एकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है।

भाषा, धर्म और पंथ - भारत की राष्ट्रिय भाषा हिन्दी है। हालांकि विभिन्न राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में लगभग 22 आधिकारिक भाषाएँ और 400 दूसरी भाषाएँ प्रतिदिन बोली जाती हैं। इतिहास के अनुसार हिन्दू और बौद्ध धर्म जैसे धर्मों की जन्मस्थली के रूप में भारत को पहचाना जाता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या हिन्दू धर्म से संबंध रखती है। हिन्दू धर्म की दूसरी विविधता शैव, शक्त्य, वैष्णव और स्मार्ता हैं।

वेषभूषा और खानपान - भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है जहां विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एकसाथ रहते हैं। देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां देश के अलग अलग हिस्सों में भिन्न भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। आमतौर पर यहाँ के लोक वेषभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खाने की आदतों में भिन्न होते हैं।

पर्व और जयंतियाँ - विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती आदि। बिना एक-दूसरे में टांग अड़ाये बेहद खुशी और उत्साह के साथ देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मों के लोग अपने त्योहार मनाते हैं। कुछ कार्यक्रम जैसे बुद्ध पुर्णिमा, महावीर जयंती, गुरु पर्व आदि कई धर्मों के लोगों द्वारा एकसाथ मनाया जाता है। इसलिए भारत दुनियाभर में अपने विभिन्न संस्कृतियों के लिए प्रसिद्ध है।



श्री प्रदिप्ताकुमार पट्टनायक
लेखाकार

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग क्या है ?

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग खेती का एक आधुनिक तरीका है। रेन वॉटर हार्वेस्टिंग को वर्षा जल संचयन भी कहते हैं।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, पृथ्वी पर जल स्तर में लगातार कमी होती जा रही है। हमारे देश में कई क्षेत्रों में अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वही कई क्षेत्रों में भयंकर सूखा होने के कारण एक-एक बूंद के लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में पानी की कमी की समस्या को दूर करने के लिए रेन वॉटर हार्वेस्टिंग (Rainwater Harvesting) एक बेहतर विकल्प है।

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग बारिश के पानी को जमा करने का एक तरीका है। जिसका इस्तेमाल खेती के लिए किया जाता है। इस विधि में जल का संरक्षण किया जाता है। इससे धरती में पानी का स्तर भी बढ़ जाता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो रेन वॉटर हार्वेस्टिंग विधि के द्वारा वर्षा के जल को संरक्षित किया जाता है। वर्षा के जल को अपनी आवश्यकता के अनुसार हम विभिन्न कार्यों में उपयोग कर सकते हैं।

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग के फायदे

- वर्षा के संरक्षित जल का उपयोग व्यावसायिक कार्यों में कर सकते हैं।
- वर्षा के जल को संरक्षित कर के घर की साफ-सफाई, स्नान करना, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना जैसे कई घरेलू कार्य भी किए जा सकते हैं।
- वर्षा के पानी को भूमि के अंदर भेजकर हम जमीन के अंदर मौजूद मीठे पानी के स्तर को बढ़ा सकते हैं।
- वर्षा का जल प्रयोग करने से सप्लाई का पानी या भूमि के अंदर के पानी की बचत होती है।

तामिलनाडु भारत का एकमात्र राज्य है और अब पहला भारतीय राज्य होगा जहाँ बारिश के पानी को एकत्रित करना जरूरी होगा। तामिलनाडु राज्य सरकार ने 30 मई 2014 को यह घोषणा की है कि चेन्नई में विभिन्न स्थानों पर बारिश के जल को एकत्रित करने के लिए लगभग 50,000 ढांचों की स्थापना करनी है। अब तक तामिलनाडु में लगभग 4,000 मंदिरों में वर्षा जल संग्रहण के लिए टैंक हैं। जमीन के पानी को पुनर्भरण में भी मदद कर रहे हैं।



श्रीमती गीता कोटीयन
वरिष्ठ लेखाकार

महाकवि विद्यापति

भगवान शिव के विरह में महाकवि विद्यापति द्वारा मैथिली भाषा में गाया गया शोकगीत -

उगना रे । हेरे उगना कते गेले रूसना,
कतेक तोरा तक्बो रे येह बॉन मे ।।

आशुतोष शंकर सम्भू छें
तू छें ज्ञानी - विज्ञानी हां ...

भिकमंगगा अनका लेल छे बर दानी ज्ञान सं छौ आँइख मुनल
हमर जे-2

राइत राइत हम कांनय छी
रै उगना तू कत गेलें

विद्यापति

पदावली रचयित महाकवि विद्यापति हिंदी साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख कवियों में से एक हैं । जिन्हें बिहार के मिथिला के मैथिली भाषा के सर्वोपरि कवि के रूप में जाना जाता है । वे भगवान शिव के अनन्य भक्त हुआ करते थे । उन्होंने भगवान शिव पर अनेकानेक गीतों, छंदों एवं कविताओं की रचना की है । मान्यताओं के अनुसार जगतव्यापी भगवान शिव विद्यापति की भक्ति व रचनाओं से बेहद प्रसन्न होकर स्वयं एक दिन वेश बदलकर उनके पास चले आए थे । उनके साथ रहने के लिए भगवान शिव विद्यापति के घर नौकर तक बनने के लिए तैयार थे । उन्होंने अपना नाम उगना बताया था । दरअसल कवि विद्यापति की स्थिति आर्थिक रूप से दयनीय थे । इसलिए उन्होंने उगना अर्थात् भगवान शिव को नौकरी पर रखने से मना कर दिया । मगर फिर शिवजी के कहने पर ही सिर्फ दो वक्त के भोजन पर उन्हें रखने के लिए विद्यापति तैयार हो गए थे ।

जब एक दिन विद्यापति राजा के दरबार में जा रहे थे तो तेज गर्मी व धूप से विद्यापति का गला सूखने लगा । मगर आस-पास कोई जल का स्रोत नहीं था । इस पर साथ चल रहे विद्यापति ने उगना (शिवजी) से जल लाने के लिए कहा । तब शिव जी ने थोड़ा दूर जाकर अपनी जटा खोली और एक लोटा गंगाजल ले आए । जल पीते ही विद्यापति को गंगाजल का स्वाद आया, उन्होंने सोचा कि सुदूर तक फैला हुआ इस वन के बीच यह जल कहां से आया ? इसके बाद उन्हें संदेह हुआ कि कहीं उगना स्वयं भगवान शिव ही तो नहीं है । उन्होंने शिव के चरण पकड़ लिए और शिवजी को अपने वास्तविक स्वरूप में आने के लिए हठ करने लगे । भक्त विद्यापति

की इस हठता के सम्मुख भगवान शिव को बेबस होना पड़ा । इसके बाद शिवजी ने महाकवि विद्यापति के साथ रहने की इच्छा जताई और उन्हें बताया कि वह उगना बनकर ही साथ रहेंगे । उनके इस वास्तविक रूप के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए । जिस दिन उसके इस रूप का पता किसी दूसरे को चल जाएगा तो वो उनके साथ नहीं रहेंगे ।

इस पर विद्यापति ने भगवान शिव की सारी बातें मान ली । लेकिन एक दिन उगना द्वारा किसी गलती पर कवि की पत्नी शिवजी को चूल्हे की जलती लकड़ी से पीटने लग गई । उसी समय विद्यापति वहां आ गए और उनके मुख से निकल गया अरे ! मूर्ख, ये तुम क्या कर रहे हो ? ये साक्षात् भगवान शिव हैं और तुम इन्हें मार रही हो । मगर विद्यापति के मुख से जैसे ही यह बात निकली तो भगवान शिव अंतर्ध्यान हो गए । इसके बाद अपनी भूल पर पछताते हुए कवि विद्यापति वनों में शिव जी को खोजने लगे । अपने प्रिय भक्त की ऐसी दशा देखकर भगवान उनके समक्ष प्रकट हुए और उन्हें समझाया कि मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता । परंतु उगना के रूप में जो तुम्हारे साथ रहा उसके प्रतीक चिन्ह के रूप में अब मैं शिवलिंग के रूप में तुम्हारे पास विराजमान रहूंगा । उसके बाद से ही उस स्थान पर स्वयंभू शिवलिंग प्रकट हो गया ।

उगना महादेव मंदिर की खासियत

उगना महादेव मंदिर के गर्भगृह में जाने के लिए आपको छह सीढ़ियां उतरकर जाना पड़ता है । इसी प्रकार उज्जैन में स्थित महाकाल मंदिर में भी शिवलिंग तक पहुंचने के लिए छह सीढ़ियां उतरनी पड़ती है । उगना महादेव मंदिर का शिवलिंग तल से पांच फुट नीचे है । इस समय जो आप मंदिर देखते हैं उसका निर्माण साल 1932 में हुआ है । इसके अलावा बताया जाता है कि 1934 के भूकंप में मंदिर को कोई भी नुकसान नहीं आया था । हालांकि आज मंदिर का परिसर काफी भव्य बना दिया गया है । मुख्य मंदिर के अलावा परिसर में यज्ञशाला और संस्कारशाला भी बनाई गई है । इस मंदिर के सामने एक सुंदर सरोवर और पास में ही एक कुआं भी है । इस कुएं के बारे में ऐसी मान्यता है कि शिवजी ने यहीं से पानी निकाला था । इस कारण से काफी श्रद्धालु इसका पानी पीने के लिए यहां आते हैं ।

यहां कैसे पहुंच सकते हैं

उगना महादेव मंदिर जाने के लिए आप बिहार के राजधानी पटना से 173 किलोमीटर मधुबनी जाने वाली रेलवे लाइन या बस से पर उगना हॉल्ट पहुंच सकते हैं। यहां से उगना महादेव मंदिर की दूरी करीब सिर्फ दो किलोमीटर ही रह जाती है। इसके अलावा बस से भी दरभंगा से सकरी होते हुए पंडौल पहुंचा जा सकता है। पंडौल से 1 किलोमीटर पहले ब्रम्होतरा गांव की भवानीपुर से दूरी 4 किलोमीटर है। यहां से भी आप पैदल या फिर निजी वाहन से जा सकते हैं।

विद्वान कालिदास

मेघदूतम्, कुमारसंभवम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् महाकवि कालिदास का विश्वविख्यात नाटक है जिसका अनुवाद प्रायः सभी विदेशी भाषाओं में हो चुका है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में राजा दुष्यन्त तथा शकुन्तला के प्रणय, विवाह, विरह, प्रत्याख्यान तथा पुनर्मिलन की एक सुन्दर कहानी है। कालिदास के बारे में कथाओं और किवदंतियों से ये पता चलता है की वह शकल-सूरत से सुंदर थे और विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में एक थे। प्रारंभिक जीवन में कालिदास अनपढ़ और मूर्ख थे। कालिदास इतने बड़े मूर्ख थे कि जिस पेड़ की टहनी पर बैठ थे, उसी टहनी को वो काट रहे होते हैं।

कहा जाता है कि विदुषी विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वह उसी के साथ शादी करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो अपमान से दुखी कुछ विद्वानों ने कालिदास से उसका शास्त्रार्थ कराया। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी, जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे। विद्योत्तमा को लगता था कि वो गूढ़ प्रश्न का गूढ़ जवाब दे रहे हैं। उदाहरण के लिए विद्योत्तमा ने प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया तो कालिदास को लगा कि यह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है। उसके जवाब में उसने घूसा दिखाया तो विद्योत्तमा को लगा कि वह कह रहा है कि पाँचो इन्द्रियों भले ही अलग हो, सभी एक मन के द्वारा संचालित हैं।

बाद में जब विद्योत्तमा का पंडितों द्वारा उसे ठगे जाने का अहसास होता है, तो वो कालिदास को ठुकरा देती है। साथ ही विद्योत्तमा ये भी कहती है - अगर वे विद्या और प्रसिद्धि अर्जित कर लौटते हैं तो वह उन्हें स्वीकार कर लेगी।

मूर्ख कालिदास बने विद्वान कालिदास

कालिदास के गाँव के पूर्व दिशा में एक संस्कृत पाठशाला थी। इस पाठशाला और मंदिर के बीच एक विशाल नदी थी। महामूर्ख कालिदास अपनी विदुषी पत्नी विद्योत्तमा से तिरस्कृत होकर माँ भगवती के शरण में उच्चेठ आ गए थे और उस विद्यालय के आवासीय छात्रों के लिए खाना बनाने का कार्य करने लगे।

एक बार भयंकर बाढ़ आई और नदी का बहाव इतना ज्यादा था की मंदिर में संध्या दीप जलाने का कार्य जो कि छात्र किया करते थे। वो सब जाने में असमर्थ हो गए, कालिदास को महामूर्ख जान कर उसे आदेश दिया गया कि आज शाम वो दीप जला कर आये और साथ ही मंदिर को कोई निशानी लगा कर आए ताकि ये साबित हो सके कि वो मंदिर में पहुंचा था।

इतना सुनना था कि कालिदास झट से नदी में कूद पड़े और किसी तरह तैरते-डूबते मंदिर पहुंच कर दीपक जलाया और पूजा अर्चना की। अब मंदिर का कुछ निशान लगाने की बारी थी ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि उन्होंने दीप जलाया। कालिदास को कुछ नहीं दिखा तो उन्होंने जले दीप के कालिख को ही हाथ पर लगा लिया।

अब निशान बनाने के लिए उन्हें कुछ दिखा नहीं तो मूर्ख कालिदास ने माँ भगवती के साफ मुखमंडल पर ही कालिख लगा दिया, तभी माता प्रकट हुई और बोली दे मूर्ख कालिदास तुम्हें इतने बड़े मंदिर में कोई और जगह नहीं मिली और इस बाढ़ और घनघोर बारिश में जीवन जोखिम में डाल कर तुम दीप जलाने आ गए हो। ये मूर्खता हो या भक्ति लेकिन मैं तुम्हें एक वरदान देना चाहती हूँ। कालिदास ने अपनी आपबीती सुनाई कि कैसे उनकी मूर्खता के कारण पत्नी ने तिरस्कार कर भगा दिया। इतना सुनकर देवी ने वरदान दिया - आज सारी रात तुम भी पुस्तक स्पर्श करोगे, वो तुम्हें कंठस्थ हो जाएगा।

कालिदास लौटे और सारे विद्यार्थियों के किताबों को स्पर्श कर डाला और आगे चलकर एक विद्वान कवि बने और इसके उपरांत ही उन्होंने अभिज्ञान शाकुन्तलम्, कुमार संभव, मेघदूत आदि की रचना की। आज भी वो नदी, उस पाठशाला के अवशेष मंदिर के निकट मौजूद है। मंदिर प्रांगण में कालिदास के जीवन से सम्बंधित चीजें चित्रांकित हैं।

दर्शनीय स्थल :

बिहार के मधुबनी जिले के बेनीपट्टी गांव में यही मां काली का सिद्धपीठ उच्चेठ भगवती के नाम से प्रसिद्ध मंदिर अवस्थित है। इस सिद्धपीठ पर काले शिलाखंड पर देवी की मूर्ति बनी हुई है। यहां मां सिंह पर कमल के आसन पर विराजमान है। माता का सिर्फ कंधे तक का हिस्सा ही नजर आता है। सिर नहीं होने के कारण इन्हें छिन्नमस्तिका दुर्गा के नाम से जाना जाता है। माता के मंदिर के पास ही एक शमशान है जहाँ आज भी तंत्र साधना की जाती है।

ऐसी मान्यता है कि यहाँ छिन्न मस्तिका माँ दुर्गा स्वयं प्रदुर्भावित है और यहाँ जो भी आता है उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। लोक मान्यता है कि उच्चेठ भगवती से जो भी भक्त श्रद्धापूर्वक मांगा जाता है मां उसे अवश्य पूरा करती है। इसलिए इन्हें दुर्गा के नवम रूप सिद्धिदात्री और कामना पूर्ति दुर्गा के रूप में भी लोग पूजते हैं। भगवान श्री राम भी जनकपुर की यात्रा के समय उच्चेठ पहुंचे थे।

उच्चेठ देवी स्थान कैसे पहुंचे

उच्चेठ देवी स्थान बेनीपट्टी से 4 किलोमीटर पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन है मधुबनी। सड़क द्वारा ये चारो दिशाओं से जुड़ा हुई है। अगर अपनी गाड़ी न हो तो बस के द्वारा भी यहां जाया जा सकता है। यह सिद्धपीठ सड़क मार्ग द्वारा दरभंगा, सीतामढ़ी और मधुबनी से जुड़ा हुआ है। इन स्थानों से बस और टैक्सी से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।



श्री भारत भूषण कुमार
लेखाकार



SANYUKTA PRAKASH RANE



सुश्री संयुक्त प्र. राणे
सुपुत्री श्रीमती सरिता प्र राणे



SANYUKTA PRAKASH RANE



कुमार सार्थक प्र. राणे
सुपुत्र श्रीमती सरिता प्र राणे

विडंबना

एक गाँव में एक लड़का अपने माता-पिता व छोटी बहन के साथ रहता था। वह बहुत ही ज्यादा शैतानी करता था। उसकी शैतानियों के चर्चे पूरे गाँव में था। रोज कुछ न कुछ शिकायत उसके माता-पिता को सुननी पड़ती थी। माता-पिता दोनों बहुत परेशान हो गए थे। एक दिन वह पड़ोसी के साथ मारपीट कर आया। जब पड़ोसी उसकी शिकायत लेकर उसके घर पहुँचे तो गुस्से में उसके पिता ने उसे बहुत पीटा और घर से निकाल दिया।

कई दिन बीत गए, लड़के की कोई खबर नहीं आई। माता-पिता दोनों चिंतित रहने लगे। लगभग 5 महिनो के बाद उनके पास उनके बेटे का पत्र आया, जिसमें लिखा था कि पिताजी जिस दिन आपने मुझे घर से निकाला था, मैं गुस्से में हमारे जिले पहुँच गया था, वहाँ मैंने देखा कि सेना में भर्ती चल रही है। मैंने भी भर्ती में भाग ले लिया और मेरा भी चयन हो गया। आप सभी के आर्शिवाद से सब ठीक है और मैं अगले महिने छुट्टी पर आ रहा हूँ।

यह पत्र पढ़कर माता-पिता की आँखों में खुशी के आँसू आ गए, उनकी खुशी का कोई भी ठिकाना नहीं था। वे पूरे गाँव में घूम-घूम कर अपने बेटे के बारे में सबको बता रहे थे।

अगले महीने जब बेटा गाँव में आया तो सब गाँव वालों ने उसका दिल से स्वागत किया। पूरे गाँव में लड्डू बाँटे गये। पूरे घर में खुशी का माहौल था। छुट्टी पूरी होने के बाद बेटा वापस अपने कार्यस्थल पर जाने के लिए तैयार हो गया। सभी गाँव वाले पूरे सम्मान के साथ उसे विदा करने आए।

लगभग दो महिनो के बाद बेटे का पत्र आता है जिसमें लिखा था कि पिताजी अचानक युद्ध का माहौल बन गया था, दोनों ओर से गोलाबारी हो रही थी, आपके बेटे पर आनेवाली गोलियाँ मेरे एक मित्र ने अपने ऊपर ले ली जिसकी वजह से उसका दाहिना हाथ और दाहिना पैर काटना पड़ा। इस स्थिति में अब वह कार्य नहीं कर सकता इसलिए उसे सेना से निवृत्त कर रहे हैं। उसका इस दुनिया में कोई नहीं है। क्या आप उसकी जिम्मेदारी ले पाएँगे। आपके जवाब के इन्तजार में आपका पुत्र।

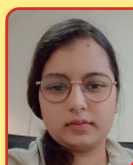
यह पत्र पढ़कर पिताजी ने जवाब में लिखा कि हम बुढ़े हो चले हैं। घर में तुम्हारी जवान बहन भी है। हम कैसे उसका ध्यान रख पाएँगे। बहुत तकलीफ हो जाएगी। बेटा, उसको कोई भी बहाना बनाकर टाल दो।

पत्र भेजकर 2-3 महिने हो गए लेकिन बेटे के पास से कोई भी जवाब नहीं आया। अब पिताजी को चिंता होने लगी कि बेटा कहीं नाराज तो नहीं हो गया? वे पत्र पर लिखे पते पर जाते हैं। बेटे कि यूनिट में जब पहुँचते हैं तो गेट पर उन्हें रोक दिया जाता है। वो बताते हैं कि मैं अपने बेटे से मिलने आया हूँ। बेटे के बारे में सुनकर वे उन्हें उनके बड़े अधिकारी के पास ले जाते हैं। वहाँ उन्हें बिठाया जाता है और बताया जाता है कि उनका बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। ये सुनते ही पिता को धक्का सा लगता है। वो पुछते हैं कि क्या हुआ, तो उन्हें बताया जाता है कि युद्ध के दौरान उसे कई गोलियाँ लगी थी, जिसकी वजह से उसके दाहिने हाथ और पैर को काटना पड़ा था। उसे सेना से भी निवृत्त किया था, पर पता नहीं क्या हुआ कि एक दिन पहले ही उसने आत्महत्या कर ली।

यह सुनते ही पिताजी को सारी कहानी समझ आ गई, कि बेटा अपने ही बारे में पुछ रहा था और मैंने मना कर दिया। यह सोचकर पिता फूट-फूट कर रोने लगा।



श्री संजय कुमार
लेखाकार



सुश्री फैजा मुश्ताक मुखरी
सुपुत्री श्री मुश्ताक मुखरी

अन्य गतिविधियाँ



अन्य गतिविधियाँ



हिंदी पखवाड़ा



हिंदी पखवाड़ा



